Delhi Postal Regd. No. DL (C) - 01/1272/2021-23 R.N.I. No. 72014/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

# अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 41 • 18 - 24 जुलाई, 2022 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 16-07-2022 • पेज : 12 • ₹ 10


**अर्हत उवाच**

अमणुण्णसमुप्पायं दुक्खमेव विजाणिया।
समुप्पायमजाणंता, किह णाहिंति संवर?

**दुःख असंयम से उत्पन्न होता हैयह ज्ञातव्य है। जो दुःख की उत्पत्ति को नहीं जानते वे संवर (दुःख-निरोध) को कैसे जानेंगे?**

## अष्टम् आचार्य कालूगणी की जन्मभूमि में आचार्यश्री महाश्रमण जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

## छापर का चातुर्मास खूब अध्यात्ममय और समाधिस्थ हो : आचार्यश्री महाश्रमण

# धर्म का सार है–अहिंसा, संयम और तप : आचार्यश्री महाश्रमण

**छापर, ६ जुलाई, २०२२**

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य परमपूज्य श्री कालूगणी की पावन जन्मस्थली छापर जहाँ आज प्रातः लगभग ७:२१ पर तेरापंथ के एकादशम अनुशास्ता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ विक्रम संवत् २०७९ (ई० सन् २०२२) का पावन पावस प्रवास करने हेतु पधारे। छापर सेवा केंद्र भी है। पूज्यप्रवर ने आज प्रातः लगभग ६:५० पर चाड़वास से छापर के लिए विहार किया। विहार के कुछ समय पश्चात ही मानो पूरा रास्ता महाश्रमणमय हो गया। चारों तरफ मंगल ध्वनियाँ, जयघोष ने वातावरण को तेरापंथमय बना दिया। तेरापंथ समाज के सभी संगठनों के अलावा विभिन्न स्कूलों के बच्चे, अनेक सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्ता जुलूस को विराट बना रहे थे। तीन किलोमीटर की इस दूरी को पाटकर ज्योंहि आचार्यप्रवर कालूमहाश्रमण भवन पधारे मानो छापरवासियों की ७४ वर्ष की मनोकामना पूर्ण हो गई।

तेरापंथ के एकादशम महासूर्य ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में मंगल की आकांक्षा की जाती है। दूसरों के लिए भी मंगलकामना की जाती है और आदमी खुद का भी मंगल चाहता है।

मंगल के लिए कुछ उपाय भी काम में लिए जाते हैं। कई शुभ मुहूर्त देखते हैं। कुछ मंगल मंत्र का पाठ भी करते हैं। मंगलपाठ भी सुनते हैं। गुड़-चंवलेड़ी आदि पदार्थों का भी उपयोग किया जाता है कि मंगल हो। ये चीजें कुछ सहायक-निमित्त बन सकें तो बन सकते हैं।

उत्कृष्ट मंगल क्या है। शास्त्रकार ने ये बात बताई है। धर्म उत्कृष्ट मंगल है। धर्म का सार है–अहिंसा, संयम और तप धर्म है। कोई भी प्राणी हंतव्य नहीं है, यह धर्म शाश्वत है। अहिंसा को परम धर्म भी कहा गया है। सब प्राणियों को अपने समान समझें। मैं अपने सुख के लिए दूसरे के सुख को बाधित क्यों करूँ। सब जीव सुख पाना चाहते हैं।

जो व्यवहार अपने लिए दूसरों से नहीं चाहते, हम भी वह व्यवहार दूसरों के साथ न करें। इस प्रकार का चिंतन अहिंसा का चिंतन है। संयम धर्म है। मन, वचन, शरीर का संयम रखना, अशुभ से इनको बचाना, यह संयम जहाँ है, वहाँ मंगल है। तप भी मंगल है। मन का शुभ कार्य में प्रवृत्त होना, वचन और काय का शुभ में प्रवृत्त होना तप है। अच्छे अध्यवसाय भी तप हो सकते हैं।

शास्त्रकार ने कहा है कि उस आदमी को देवता भी नमस्कार करते हैं, जिसका मन धर्म में रमा रहता है। आज हमें वि०सं० २०७९ का चतुर्मास छापर में करने के लिए चातुर्मासिक मंगल प्रवेश किया है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के समय जो निर्णय हुआ था, उसको क्रियान्वित करने के लिए हमने चातुर्मासिक प्रवेश किया है। (शेष पृष्ठ २ पर)

# चातुर्मास का समय धर्माराधना के लिए महत्त्वपूर्ण होता है : आचार्यश्री महाश्रमण

**छापर, १० जुलाई, २०२२**

संत शिरोमणी परम वंदनीय आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि शास्त्रकार ने त्राण और शरण इन शब्दों का इस श्लोक में प्रयोग किया है। हमारी दुनिया में निश्चय नय में देखा जाए तो अपनी आत्मा ही त्राण है। अपनी आत्मा ही शरण है।

व्यवहार में दूसरा आदमी किसी का त्राण-शरण बन सकता है। निश्चय नय में बात है कि तुम्हारे स्वजन त्राणदाता-शरण दाता नहीं बन सकेंगे। तुम भी उनके लिए त्राणदाता और शरणदाता नहीं बन सकते। मंगलपाठ हमारे यहाँ प्रसिद्ध भी है और श्रद्धा प्राप्त भी है। मंगलपाठ में एक लाइन है–केवली प्रज्ञप्त धर्म की शरण स्वीकार करता हूँ। धर्म हमारे लिए त्राण बनता है।

अनाथी मुनि का प्रसंग समझाते हुए फरमाया कि कोई जिम्मेदारी नहीं ले सकता कि किसी के जीवन में बीमारी, बुढ़ापा या मृत्यु नहीं आएगी। कोई किसी का नाथ नहीं बन सकता। संसार में सब अनाथ हैं। धर्म ही हमारे लिए त्राण है, शरण है। अत्राणता संसार में है, मौत को कोई बचा नहीं सकता।

छापर के अष्टमाचार्य परम पूज्य कालूगणी को भी कोई बचा नहीं सका, शरीर में व्याधि हुई और आखिर वे महाप्रयाण को प्राप्त हो गए। (शेष पृष्ठ २ पर)

# अर्हतों के अनुभवों का सार होते हैं जैन आगम : आचार्यश्री महाश्रमण

**छापर, ११ जुलाई, २०२२**

युगप्रधान महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि जैन आगमों में अनेक विषयों से संबंधित वर्णन प्राप्त होते हैं। जैन आगमों की भाषा आम आदमी के समझ में न भी आए, परंतु उसको समझने का प्रयास हिंदी भाषा आदि भाषाओं के अनुवाद से किया जा सकता है। टिप्पणों के माध्यम से विशेष जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

हमारे यहाँ जैन आगमों के संपादन का कार्य भी परमपूज्य आचार्य तुलसी के सान्निध्य में शुरू हुआ था। परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञ जी, जिनका बहुत योगदान आगमों के संपादन आदि कार्य में हुआ है, लगा है। ३२ आगम हमारी परंपरा में मान्य हैं। इन बत्तीस आगमों का मूलपाठ सभी आगमों का संपादित हो गया है। वह प्रकाशित रूप में बहुत वर्षों पहले सामने आ गया है।

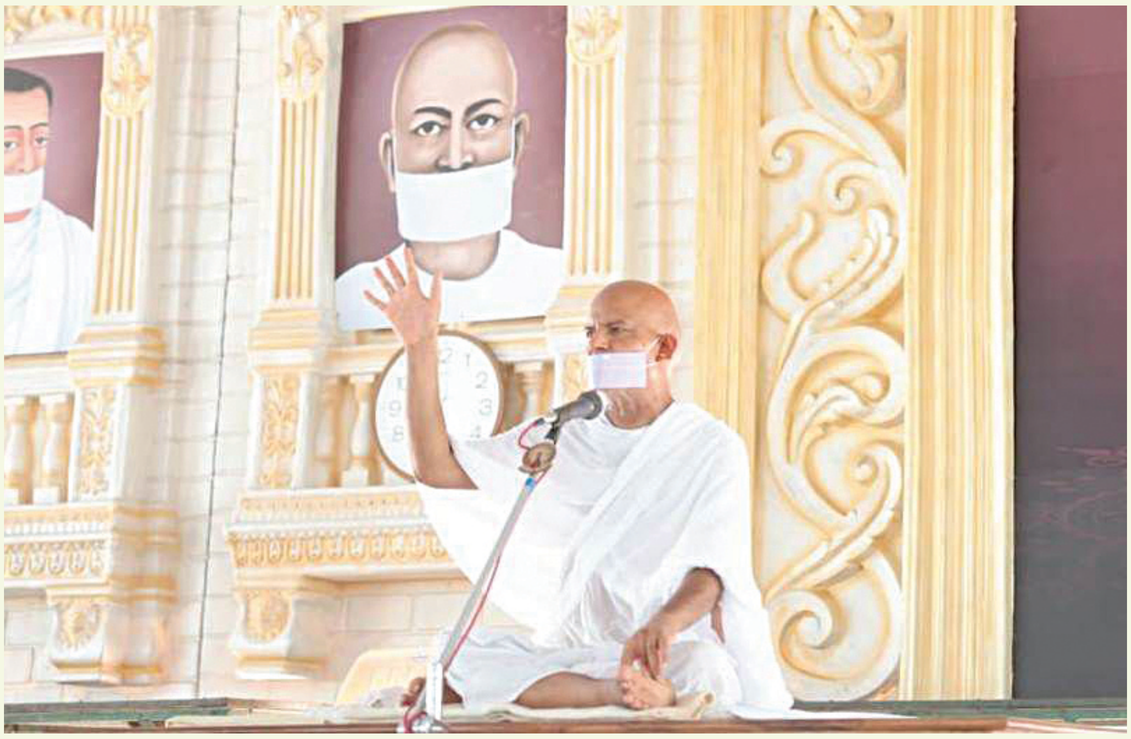

हिंदी भाषा में अनुवाद और व्याख्या यह दूसरी सीरीज है, इसके अंतर्गत भी अनेक-अनेक आगम आ गए हैं। अभी भी कार्य चल रहा है। आगमों में अनेक विषय वर्णित हैं। जहाँ सृष्टि के बारे में इनमें वर्णन मिलता है। अध्यात्म की साधना में भी क्या करना, क्या नहीं करना इस विषय का भी सुंदर संदेश-पथदर्शन मिलता है।

दशवेंआलियं एक आगम है, जिसे हमारी चारित्रात्माएँ बहुलतया याद करते हैं। नवदीक्षित साधु-साध्वियाँ इसे विशेषतया याद करते हैं। साधु चर्या के बारे में एक प्रशस्त पथदर्शन-निर्देश इसमें प्राप्त हो जाता है। कैसे बोलना, गोचरी करना, विनयपूर्ण व्यवहार कैसे करना, महाव्रत क्या है, हिंसा से बचना, षट् जीवनिकाय की जानकारी, भिक्षु के लक्षण क्या आदि इस आगम के अध्यायों में प्राप्त होता है।

तत्त्वज्ञान की जानकारी पन्नवणा सूत्र में भरी पड़ी है। बत्तीस आगमों में सबसे बड़ा आगम भगवती सूत्र है—इसमें भी कितना तत्त्वज्ञान भरा पड़ा है। बहुलांश कार्य भगवती सूत्र का हो गया है, जैन विश्व भारती ने प्रकाशन भी कर दिया है। नया धम्म कहावतों में दृष्टांत, उवासग्ग दसाओं में श्रावकों की जानकारी रखने वाला सिद्ध हो सकता है। उत्तराध्ययन में भी अनेक विषयों की जानकारी दी।

ज्ञान के संदर्भ में प्रकाश डालने वाला नंदी सूत्र है। साध्वाचार में गलतियों के प्रायश्चित के रूप में छेद सूत्र–निशीथ आगम पठनीय है। 'अर्हतों के अनुभवों का आगमों में सार है।' आयारो सूत्र जिसका भाष्य आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने संस्कृत भाषा में लिखा है, विद्वतजनों में वह बहुत प्रशंसनीय है।

उत्तराध्ययन के एक श्लोक में कहा गया है कि ये संसार अनित्य है, अध्रुव है। साथ में दुःख भी बहुत है। अनेक रूपों में दुःख आ सकते हैं। शारीरिक, मानसिक दुःख हो सकता है। यहाँ तो दुःख है ही, आगे के जीवन में क्या होगा, यह चिंतनीय है। इस जीवन के बाद में दुर्गति में न जाऊँ।

इस संसार में एक चिंता दूर होती है, तो दूसरी चिंता खड़ी हो जाती है। दुःख में समस्याएँ हो सकती हैं, पर मन में शांति रखें। समस्या का हल खोजा जा सकता है। पूज्य कालूगणी के भी समस्या आई थी, पर उन्होंने भी लगता है, कितना मनोबल रखा था। गंगापुर पधार गए और अपने सुशिष्य मुनि तुलसी को दायित्व सौंपकर विदा हो गए।

समस्या आने पर भी समता रहे, वो खास बात है। शास्त्रकार ने कहा है कि अध्रुव, अशाश्वत और दुःख बहुल संसार में हमें आगे दुर्गति में न जाना पड़े इसके लिए अध्यात्म की साधना करें। सत्संग, साधुओं का समागम भी बहुत अच्छी बात है। इतनी बड़ी संख्या में चतुर्मास करने के लिए साधुओं का इकट्ठा होना अच्छी बात है।

दुःख बहुल संसार में हम परम सुख की ओर गति कर सकें, ऐसा हमें ध्यान देना चाहिए, प्रयत्न करना चाहिए।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि कष्टों को सहन करने के लिए शक्ति की जरूरत होती है। हमारे भीतर अनंत शक्ति है, अपेक्षा है, उसको जागृत करने की। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने कुछ ऐसे प्रयोग बताए है।, जिनसे हम अपनी शक्ति को उजागर कर सकते हैं। दीर्घ श्वास प्रेक्षा, क्रोध पर नियंत्रण, वाणी का संयम, आहार का संयम और कायोत्सर्ग—ये पाँच उपाय हैं, जिनसे शक्ति को उजागर किया जा सकता है।

साध्वी साधनाश्री जी एवं साध्वी अमितप्रभाजी को गुरुदेव ने छापर गुरुकुल में चतुर्मास करने की कृपा करवाई है। पूज्यप्रवर की अभिवंदना में दोनों साध्वियों ने गीत के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

पूज्यप्रवर के स्वागत में नरेंद्र सुरेंद्र नाहटा, धनराज दुधेड़िया, तेयुप मंत्री दिलीप मालू, महिला मंडल, छापर-गुवाहाटी, उपासिका तारामणी दुधोड़िया, अणुव्रत समिति महिला टीम, राहुल बैद, इंद्रराज नाहटा ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि प्रमाद आदमी को नीचे धकेलने वाला बन सकता है।

## धर्म का सार है-अहिंसा, संयम...

**(प्रथम पृष्ठ का शेष)**

चतुर्मास का समय अपने आपमें एक अपेक्षा से, एक जगह रहकर कार्य करने की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण भी होता है। हम जैन शासन में साधना कर रहे हैं। कितनें तीर्थंकर, आचार्य, साधु-साध्वियाँ जैन शासन में हुए हैं। आचार्य भिक्षु ने लगभग २६२ वर्ष पूर्व इस जैन श्वेतांबर तेरापंथ का प्रतिष्ठापन किया था। यदा-कदा उनका स्मरण भी करते रहते हैं।

हम आचार्य भिक्षु से संबद्ध शासन में साधना कर रहे हैं। उत्तरवर्ती उनकी आचार्य परंपरा में अष्टमाचार्य परम पूज्य कालूगणी थे। आज हम हमारे आठवें गुरु की जन्मभूमि में चतुर्मास करने के लिए आए हैं। गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी के श्रीमुख से पूज्य कालूगणी के बारे में फरमाया जाता तो अलग ही बात होती। उन्होंने तो साक्षात उनका सान्निध्य प्राप्त किया था।

कालूगणी के दो शिष्य हमें आचार्य के रूप में प्राप्त हुए। मैंने भी उनकी माला फेरकर निर्णय किया था कि साधु बनूँ या न बनूँ। अनेक साधु-साध्वियाँ हमारे साथ हैं। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी तो प्रथम बार चतुर्मास प्रवेश हेतु पधारी हैं। सभी साधु-साध्वियाँ खूब स्वस्थ रहते हुए, खूब प्रशस्त कार्य करते रहें। गुरुओं की प्रेरणा हमें मिलती रहे। छापर का चतुर्मास खूब अध्यात्ममय समाधिस्थ हो।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि प्रबंधन का सूत्र है—स्वप्न लो, संकल्प करो, गतिशील बनो, मंजिल को प्राप्त करो। प्रबंधन के इस सूत्र को आचार्यप्रवर जीवन में अनुसरण कर रहे हैं। वह क्षेत्र धन्य हो जाता है, जिस क्षेत्र में आचार्यों के चरण-कमल टिकते हैं। छापर ने तेरापंथ धर्मसंघ को एक कोहिनूर प्रदान किया। परमपूज्य कालूगणी पुण्य प्रतापी आचार्य थे। उन्होंने दो-दो युगप्रधान आचार्यों को अपने हाथों से दीक्षित किया। शिक्षित किया, परिक्षित किया और उन्हें आगे बढ़ाया। संघ में विकास का बीज वपण करने वाले कालूगणी थे।

पूज्यप्रवर के स्वागत-अभिनंदन में आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष माणकचंद नाहटा, स्वागताध्यक्ष रतन बैद, ज्ञानशाला, तेरापंथ महिला मंडल, विजयसिंह सेठिया (सभाध्यक्ष), महासभा से विनोद बैद, तेयुप, अणुव्रत समिति से प्रदीप सुराणा, सुजानगढ़ के एमएलए मनोज मेघवाल, भंवरलाल पुजारी (कांग्रेस जिला अध्यक्ष) नगरपालिका अध्यक्ष श्रवण माली, रतनगढ़ विधायक अभिनेष महर्षि, सुजानगढ़ की मियर निलोफर गौरी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

## चातुर्मास का समय धर्माराधना के लिए...

**(प्रथम पृष्ठ का शेष)**

बड़े-बड़े राजे-महाराजे, चक्रवर्ती होते हैं, उनको भी कोई मौत से बचा नहीं सकता। एकमात्र धर्म-अध्यात्म ऐसा तत्त्व है, जो हमें दुःखों से छुटकारा दिला सकता है। ऐसी अवस्था को प्राप्त करा सकता है, जहाँ पहुँचने के बाद न मृत्यु है, न बुढ़ापा है, न बीमारी है।

परमपूज्य कालूगणी ने वह रास्ता लिया था, जिस रास्ते पर चलने से हमेशा के लिए दुःखमुक्ति प्राप्त हो जाए। बालावस्था में मघवागणी से दीक्षा ले उनके सान्निध्य में रहने का उनको मौका मिला। वे संत भी थे, संतों के अधिनेता भी थे। लगभग २७ वर्षों का उनका आचार्यकाल रहा। डालगणी के वे उत्तराधिकारी बने। संस्कृत भाषा का विकास किया। उनके सुशिष्य मुनि तुलसी और मुनि नथमल के पास कितना संस्कृत का ज्ञान था। बाद में दोनों भी आचार्य बने।

दुनिया का ये सौभाग्य है कि त्राण पाने वाले संत लोग धरती पर रहते हैं। तीर्थंकर भी हमारी दुनिया में रहते हैं। कम से कम २० तीर्थंकर तो हमेशा रहते हैं। उत्कृष्ट १७० तीर्थंकर एक साथ एक समय में हो सकते हैं। तीर्थंकर अध्यात्म के परम प्रवक्ता होते हैं। आचार्य कालूगणी तीर्थंकर के प्रतिनिधि थे, उन्होंने धर्म का उद्योत किया। कालूगणी युग के साधु-साध्वी वर्तमान में कोई नहीं रहे। श्रावकों में तो हो सकते हैं।

चतुर्मास का समय जो धर्माराधना की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण होता है। तीन दिनों में तेले भी किए जा सकते हैं। ११, १२, १३ जुलाई को हो सकते हैं। ज्ञानाराधना भी विशेषतया की जा सकती है। दीक्षा भी होने वाली है। कितने-कितने लोग चतुर्मास में सेवा, उपासना का लाभ लेते हैं। सबकी अच्छी साधना चले। चतुर्मास अध्यात्म की दृष्टि से अच्छा रहे।

छापर चाकरी में नियुक्त मुनि पृथ्वीराज जी ने श्रावकों को दिलाए व्रत के फार्म पूज्यप्रवर को अर्पित किए। मुनि विजयकुमार जी, साध्वी काव्यप्रभाजी, साध्वी मंजुलप्रभाजी, साध्वी संघप्रभाजी ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। मुनि पृथ्वीराज जी ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर के स्वागत में भिक्षु पुरुषायी मंडल चेन्नई, तेरापंथ महिला मंडल मंत्री अल्का बैद, नरेंद्र नाहटा, सुमन बैद, तेयुप अध्यक्ष सौरभ भूतोड़िया, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा सरिता सुराणा, छाजेड़ परिवार, ज्ञानशाला ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

साध्वीवर्या जी ने कहा कि गुरु हमारे जीवन को दिशा-दर्शन देते हैं। सही राह पर चलाते हैं। गुरु दो प्रकार के होते हैं—सांसारिक गुरु और आध्यात्मिक गुरु। लौकिक गुरु की भी जीवन में जरूरत होती है। आध्यात्मिक जीवन को चलाने के लिए आध्यात्मिक गुरु की जरूरत होती है, जो हमारा सम्यक् मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# आत्मानुशासन के लिए जरूरी है शरीर, वाणी, मन और इंद्रियों पर अनुशासन : आचार्यश्री महाश्रमण

**पड़िहारा, ६ जुलाई, २०२२**

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी लोहा गाँव से ११ किलोमीटर का विहार कर पड़िहारा स्थित प्रज्ञा भवन पधारे। पड़िहारावासियों ने अपने आराध्य का भव्य स्वागत किया। मुख्य प्रवचन में तीर्थंकर तुल्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि एक शब्द है, जो दो पदों से बना है–आत्मानुशासन। अनुशासन के आगे आत्मा लगा दें तो आत्मानुशासन और पर लगा दें तो परानुशासन। परानुशासन जो दूसरों के द्वारा किसी पर नियंत्रण किया जाता है। स्वयं के द्वारा स्वयं पर जो अनुशासन किया जाता है, वह आत्मानुशासन हो जाता है, निज पर अनुशासन हो जाता है।

प्रश्न होता है कि आत्मानुशासन किस रूप में हो? दार्शनिक दृष्टि से देखें, तो आत्मा एक चैतन्य के रूप में तत्त्व है, जो शरीर के भीतर है। आत्मा स्थायी है, पर शरीर कभी अस्थायी हो जाता है। आत्मा अछेद्य, अदाह्य, अकलेव्य, अशोष्य है। आत्मा पर अनुशासन हो गया तो स्वयं पर अनुशासन हो गया।

आत्मा तो अमूर्त है, अदृश्य है, न आत्मा को हाथ में लेकर दिखाया जा सकता है। आत्मा पर अनुशासन करने के लिए हम शरीर पर अनुशासन करें। शरीर, वाणी और मन व इंद्रियों पर अनुशासन करें। इन चार पर अनुशासन सध जाता है, तो आत्मा पर अनुशासन हो जाता है।

गुरु बनने से पहले अपने गुरु के शिष्य बनो। वाणी पर संयम रखें। मन पर भी अनुशासन रखें। मन के चलाए न चलें। मन हमारा गुलाम रहे। मन से मंगल सोचें। मन हमारा एकाग्र रहे। हमारी पाँच ज्ञानेंद्रियाँ हैं, इन पर भी अनुशासन रहे। बुरा देखो मत, बुरा बोलो मत, बुरा सुनो मत और बुरा सोचो मत। ध्यान-योग के प्रयोग से मन को एकाग्र कर साधा जा सकता है।

आदमी का जीवन अच्छा बने, उसका उपाय है, आत्मानुशासन सधे। दूसरे हमारे पर नियंत्रण न करें। लोकतंत्र हो या राजतंत्र सब जगह अनुशासन का महत्त्व है। आत्मानुशासन ऐसा तत्त्व है कि विद्यार्थी हो या बड़े लोग सबके लिए काम की बात है। चाहे राजनीति हो या धर्मनीति सब जगह आत्मानुशासन आवश्यक तत्त्व है। हम सभी आत्मानुशासन का जीवन जीएँ, उस दिशा में आगे बढ़ें।

आत्मानुशासन युक्त जीवन जीने का प्रयास करें, तो हमारा ये जीवन अच्छा रह सकता है और आगे का जीवन भी अच्छा रहने की संभावना रह सकेगी।

आज पड़िहारा में आना हुआ है। संवत् २०३३ में गुरुदेव तुलसी का मर्यादा महोत्सव भी हुआ था। यहाँ भी खूब सद्‌भावना, नैतिकता, नशामुक्ति व धार्मिकता पुष्ट रहे।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि जीवन कैसे जीना चाहिए। हमें अपने लिए जीना चाहिए या आदमी के अच्छे जीवन निर्माण के लिए जीना चाहिए। इंसान को अच्छा इंसान बनाने के लिए पूज्यप्रवर ने प्रलंब यात्राएँ की हैं। अच्छा जीवन जीने के लिए विनम्र बनें। जो व्यक्ति विनम्र बन सकता है, वह सब कुछ प्राप्त कर सकता है।

पूज्यप्रवर के स्वागत, अभिवंदना में सभाध्यक्ष रतनलाल सुराणा, तेरापंथ महिला मंडल, अणुविभा से भीखमचंद सुराणा, राजकुमार सुराणा, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु दुगड़, श्रेयांस सुराणा, बजरंग सुराणा, संजु दुगड़, विजयराज सुराणा, स्थानीय सरपंच जगतसिंह राठौड़, विधायक अभिनेष महर्षि, वक्फ बोर्ड अध्यक्ष, व्यापार मंडल से किशन बुडानिया ने अपनी भावना अभिव्यक्ति की। रानी का परिवार, धनराज सुराणा, विजयसिंह सुराणा, बुद्धमल सुराणा परिवार, लक्ष्मीपत सुराणा, पूनमचंद सुराणा ने भी अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने पड़िहारा के लिए आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी द्वारा फरमाए एक माह के प्रवास को समय पर दीक्षा महोत्सव के साथ पूरा कराने का फरमाया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने तेरापंथ का विकास किस तरह हुआ, अनेक प्रसंगों से समझाया।

# उपलब्धियों का अहंकार नहीं अपितु सदुपयोग करें : आचार्यश्री महाश्रमण

**लोहा, ५ जुलाई, २०२२**

रतनगढ़ वासियों को दो दिनों तक अपनी अमृतवाणी से अध्यात्म रसपान करवाकर अमृतपुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी १० किलोमीटर का विहार कर राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, लोहा पधारे।

तीर्थंकर तुल्य आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मुख्य प्रवचन में मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि कोई आदमी किसी को अच्छी शिक्षा, हितकारी, उपयोगी बात बताता है, तो वह सामने वाला व्यक्ति शिक्षा देने वाले पर भी कुपित हो जाता है, उसकी बातों को बिलकुल महत्त्व नहीं देता है, तो वह आदमी आने वाली लक्ष्मी को घर में आने से रोकता है।

जैसे लक्ष्मी को आने से रोकना एक अहितकर बात हो सकती है, इसी प्रकार अच्छी सलाह देने वाले पर कुपित होना, उसकी अवहेलना करना भी अहितकर हो सकता है। आदमी में घमंड-अहंकार प्रबल होता है, तो वह दूसरे की अच्छी सलाह को भी गलत रूप में ले लेता है। यह बंदर और बयां के घटना प्रसंग से समझाया।

ज्ञान में अहंकार न हो। ज्ञान को बढ़ाओ, दूसरों को बताओ। ज्ञान होने पर भी मौन रहना और शक्ति होने पर भी क्षमा रखना यह एक विशेषता की बात होती है। घमंड एक ऐसा तत्त्व है, जो कर्मवाद के सिद्धांत से तो नीच गौत्र का बंध कराने वाला होता है। चेहरा सुंदर है, पर उसका भी घमंड ना हो। बड़ी बात तो साधना में है। ज्ञान और चारित्र अच्छा रहेगा तो चेहरे की भी असुंदरता दब जाएगी।

गुरुदेव तुलसी का चेहरा तो सुंदर था। आचार्य की एक संपदा होती है–शरीर संपदा। उनका चारित्र व ज्ञान भी अच्छा था। तपस्या भी निर्जरा के लिए करो, नाम-ख्याति के लिए नहीं। तप का घमंड न हो। लब्धि या सत्ता का भी घमंड न हो। अधिकार घमंड के लिए नहीं, सेवा के लिए मिलता है।

उपलब्धियाँ जो जीवन में हो, इनका अहंकार नहीं करके, इनका अच्छा उपयोग हो सके, वह करने का प्रयास करना चाहिए। कोई अच्छी शिक्षा दे, उसको अच्छे रूप में लेना चाहिए। दुनिया में अच्छी बात दूसरे के पास भी हो सकती है, जहाँ से अच्छी बात मिले उसे ग्रहण करना चाहिए।

देशाटन करने से अच्छी जानकारियाँ मिल सकती हैं। देशाटन करने से संघ की वृद्धि हो सकती है। संघ में विकास हो सकता है। अनुभव प्राप्त करो। अच्छी सलाह देना भी और लेना भी अच्छा है। हीरा कीचड़ में भी मिले तो उठा लो। अच्छी बात किसी ग्रंथ से, पंथ से या संत से मिले, काम की है, तो जीवन में उतारें। अच्छी सच्ची बातें लेने से हम जीवन में और विकास कर आगे बढ़ सकते हैं। घमंड आदमी को नहीं करना चाहिए। समुचित विनय व्यवहार रखना चाहिए। सबका विकास हो। पूज्यप्रवर ने स्थानीय लोगों को संकल्प स्वीकार करवाए।

स्थानीय सरपंच भंवरलाल एवं सदस्य राजेश ने, लालसिंह ने, उपासक श्रेणी के पूर्व संयोजक सुमेरमल सुराणा, स्कूल की ओर से पेमाराम ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि जैसे पारस पत्थर लोहे को सोना देता है, वैसे हम भी साधना करके मोक्ष की दिशा में आगे बढ़ें।

# साध्वीप्रमुखाश्रीजी के मनोनयन पर

● साध्वी नीतिप्रभा ●

इस अभ्यर्थना के सुखद पलों में
कहाँ तुम्हें बिठाऊँ।।
कोई घर नहीं, दरबार नहीं
कहाँ तुम्हें सजाऊँ ।। इस---

हाथ जोड़ कर अर्ज करूँ मैं
चरण धरूँ इस मन मंदिर में
यहीं तुम्हें बधाऊँ ।। इस---

अखंड अंक जो नौ का पायें
उसकी भाग्य लता लहरायें
ऐसी साध्वीप्रमुखा को श्रद्धा चमन चढ़ाऊँ ।। इस---

दृश्य एक अनूठा देखा
गुरु ने जो खिंची थी रेखा
देख उसे पुलकित प्रफुल्लित मन बन जाऊँ ।। इस---

वंदन करूँ अभिनंदन तेरा
इतिहास बनेगा नव नवेला
भावों के सुनहरें गीत गढ पाऊँ ।। इस---

युगों-युगों तक करों शासना
चतुर्विध संघ की है वर्द्धापना
महाप्रज्ञ की कृति को भेंट चढ़ाने
शब्दों के पुष्प कहाँ से लाऊँ ।। इस---

# दीक्षार्थी मंगलभावना समारोह

**टिटलागढ़।**

मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में मुमुक्षु अनमोल का मंगलभावना समारोह आयोजित हुआ। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि मन में वैराग्य भावना होना भी अपने आपमें अभिनंदनीय है। भौतिक सुविधाओं को त्यागकर संयम में जीने की भावना सौभाग्य की बात है। संयम जीवन को स्वीकार कर अपने जीवन को धन्य बनाऊँ ऐसा भाव आना ही सौभाग्य है। मुमुक्षु अनमोल ने ये परम शांति का पथ चुना है। इससे अच्छा और कोई मार्ग नहीं है। साधना का मार्ग अपने आपमें कठिन होता है, लेकिन मन का संयमी व्यक्ति ही ये पथ अपनाता है। साधु बनना अपने आपमें सौभाग्य की बात है। टिटलागढ़ दीक्षा का गढ़ बन जाए। भगवान महावीर स्वामी के बताए मार्ग पर आगे बढ़े एवं अपना आत्मकल्याण करें। मुमुक्षु अनमोल ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप में आगे बढ़ती रहें, यही मंगलकामना।

मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि मुमुक्ष अनमोल अपने जीवन में अनमोल कार्य करने जा रही है। दीक्षा लेना कोई बड़ी बात नहीं है। दीक्षा लेने के बाद साधुत्व का भाव भीतर में रहना चाहिए। आत्मा की पवित्रता के प्रति कदम बढ़ते रहें। धन्य हैं वे माता-पिता जो अपने बच्चों को संस्कार देने के साथ-साथ उसे दीक्षित होने की आज्ञा प्रदान करते हैं। अपने लक्ष्य के प्रति जागरूकता, गुरु के प्रति समर्पण आत्मनिष्ठा का भाव अपनी साधना को सदैव उज्ज्वल बनाएगा।

दीक्षार्थीनी अनमोल ने कहा कि भगवान महावीर ने सर्वोत्तम मार्ग संयम बताया। संसार में सुख-सुविधा मनोरंजन के साधन हैं। ये सारे शरीर एवं मन को सुख देते हैं, लेकिन कितने जीवों को पीड़ा पहुँचाकर ये संयम का मार्ग अंगीकार करना दुर्लभ है। ये अभिनंदन त्याग का संयम का है। चारित्रात्माओं ने सदैव मेरा उत्साह बढ़ाया। मैं सभी से क्षमायाचना करती हूँ। कार्यक्रम का शुभारंभ स्नेहा जैन के मंगलाचरण से हुआ। तेयुप अध्यक्ष संजय जैन, सभा मंत्री गौतम जैन, भूपेंद्र जैन, प्रांतीय सभा अध्यक्ष मुकेश जैन, टीपीएफ अध्यक्ष आशीष जैन, महासभा आंचलिक प्रभारी छत्रपाल जैन, महिला मंडल अध्यक्षा सरोज जैन, सुमन जैन ने वक्तव्य के द्वारा मंगलकामनाएँ प्रस्तुत की। महिला मंडल ने सामुहिक गीत का संगान किया।

✦ *जन्म के साथ प्राणी पीछे से क्या लेकर आया है, इसकी गहराई में कोई जा सके तो प्रकाश प्राप्त हो सकता है।*

– आचार्यश्री महाश्रमण

# महिला मंडल के विविध आयोजन

## रूपांतरण शिल्पशाला कार्यशाला का आयोजन

**कोयंबटूर।**

अभातेममं के निर्देशानुसार तेममं द्वारा रूपांतरण शिल्पशाला के अंतर्गत 'संयम' की कार्यशाला एवं आचार्यश्री तुलसी के २६वें महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। सर्वप्रथम शुरुआत मंगलाचरण श्री तुलसी अष्टकम् से कन्या मंडल की बेटियों द्वारा हुई। तत्पश्चात गीत का संगान किया गया। सामुहिक जप मधु बांठिया ने करवाया।

अध्यक्ष मंजु गीड़िया ने आगंतुकों का स्वागत किया। निशा रांका ने आचार्यश्री तुलसी के जीवन का वक्तव्य सुनाया। रूपांतरण शिल्पशाला 'संयम' का अर्थ है आम-नियंत्रण, संयम, सुखी, शांत जीवन का आधार है एवं आहार, शरीर, इच्छाओं और वाणी के संयम के बारे में जानकारी दी।

मोनिका कोटेचा ने बताया कि कैसे हम अपने मन, वचन और काया को आत्म नियंत्रण कर सकते हैं। आचार्यश्री तुलसी पर लेख लिखने वालों में सर्वप्रथम स्थान हेमा भंसाली, द्वितीय स्थान उपासिकाएँ ललिता बरलोटा एवं सुशीला बाफना और तृतीय स्थान कन्या मंडल की रिद्धि पुगलिया ने प्राप्त किया। आखिर में अभिनव अंत्याक्षरी हुई, जिसमें अपराजिता नाहटा, उपाध्यक्ष रूपकला भंडारी और रुचिका बैद ने बखूबी खिलाया कि बहनों ने जोर-शोर से भाग लिया एवं कार्यशाला को और रोमांचक बना दिया।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन मंत्री आरती रांका ने किया एवं कार्यक्रम का संचालन मुक्ता नखत ने किया।

## आचार्यश्री तुलसी की पुण्यतिथि

**मैसूर।**

तेरापंथ सभा भवन, मैसूर में साध्वी डॉ० गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में अभातेममं के निर्देशानुसार महिला मंडल ने आचार्यश्री तुलसी के २६वें महाप्रयाण दिवस को विसर्जन दिवस के रूप में मनाया। साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। शासनश्री साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी ने अनेक अवदान दिए, जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण है–विसर्जन का।

साध्वी मयंकप्रभाजी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी सभ्यता और संस्कृति का दर्पण थे, युगीन समस्याओं का समाधान व्यक्तित्व निर्माण की पाठशाला थे। विश्वशांति की अमूल्य धरोहर थे। साध्वी मेरुप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका व्यक्त की। साध्वी दक्षप्रभा जी ने गीतिका के साथ अपने गुरु के प्रति विचार भी व्यक्त किए।

मंगलाचरण महिला मंडल की बहनों ने तुलसी अष्टकम् से किया। सभी संस्थाओं के सदस्यों ने मिलकर गीतिका का संगान किया। महिला मंडल की अध्यक्षा मंजु दक ने सभी का स्वागत किया। सभा के अध्यक्ष प्रकाश दक ने अपने विचार व्यक्त किए। तेयुप के अध्यक्ष विकास गांधी मेहता ने अपने विचार व्यक्त किए। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शांतिलाल नौलखा ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संयोजन खामोश मेहर ने किया। सहमंत्री मीनाक्षी नौलखा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

## रूपांतरण शिल्पशाला का आयोजन

**तिरुपुर।**

अभातेमम द्वारा निर्देशित रूपांतरण थ्रू जैनिज्म शिल्पशाला के अंतर्गत जून माह का विषय 'संयम एक युद्ध स्वयं के विरुद्ध' का आयोजन साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यशाला का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया।

साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी ने कहा कि जीने का अर्थ यह नहीं है कि केवल प्राणों का भार ढोना है, जीने का लक्ष्य है, प्रसन्नता का जीवन जीएँ, पवित्रता का जीवन जीएँ, शांति का जीवन जीएँ, सुख में शांति का उपाय है संयम।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि आत्मा को प्राप्त करना है तो हमें अपने पाँचों इंद्रियों के २३ विषयों एवं मन, वचन, काया पर संयम करना होगा। बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया। अध्यक्ष सीमा सामसुखा ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन सीमा सामसुखा ने किया। आभार ज्ञापन प्रीति भंडारी ने किया।

## श्रीउत्सव मेले का आयोजन

**हैदराबाद।**

अभातेमम के निर्देशानुसार तेममं के तत्त्वावधान में डी०वी० कॉलोनी स्थित तेरापंथ भवन में श्रीउत्सव मेले का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। कार्यक्रम के उद्घाटनकर्ता अशोक सरोज हीरावत रहे। मंडल की बहनों ने मंगलाचरण का सुर संगान किया। अध्यक्ष अनीता गीड़िया ने सभी बहनों का स्वागत किया और स्टॉल की बहनों को शुभकामनाएँ दी।

सभा के अध्यक्ष बाबूलाल बैद, टीपीएफ अध्यक्ष मोहित बैद, संरक्षिका सुशीला संचेती, परामर्शदाता अर्पिता लोढ़ा, चंदा जैन, पूर्व अध्यक्ष प्रेम पारख ने मंडल की बहनों को श्रीउत्सव की शुभकामनाएँ दी।

श्रीउत्सव के मुख्य अतिथि एन० प्रियंका, सह-आयुक्त रही। सुरेंद्र सोभाग बांठिया ने दीप प्रज्वलित किया। कार्यक्रम का संचालन रीता सुराणा ने किया। कार्यक्रम में कोषाध्यक्ष शांता बैद व मंडल की बहनों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम की संयोजिकाएँ शकुंतला बुच्चा, शीतल सांखला, ममता छाजेड़, रूबी दुगड़, नीरा कोठारी, विनय सुराना, चंदन कोठारी, निशा दुगड़, सुमन चोरड़िया, सरिता बोथरा, सुनीता कठोतिया, वर्षा बैद, संतोष पिंचा ने कार्यक्रम की अच्छी व्यवस्था की। आभार ज्ञापन मंत्री श्वेता सेठिया ने किया।

## रूपांतरण एक्सप्रेस कार्यशाला

**मदुरै।**

स्थानीय तेरापंथ भवन में अभातेमम के निर्देशानुसार तेममं, मदुरै द्वारा रूपांतरण एक्सप्रेस का छठा स्टेशन-शक्ति एवं संयम एक युद्ध स्वयं के विरुद्ध कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामुहिक संगान से हुआ। बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

मंत्री दीपिका फूलफगर ने बताया–'संयम' का अर्थ है– आत्म-नियंत्रण, संयम सुखी शांत जीवन का आधार है। कैसे हम अपने मन, वचन और काया को आत्मनियंत्रण कर सकते हैं। अगर मन पर नियंत्रण कर लिया तो वचन और काया पर नियंत्रण स्वतः हो जाएगा। सहमंत्री लता कोठारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

## आचार्यश्री तुलसी के अवदानों पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

**सूरत।**

आचार्यश्री तुलसी महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में अभातेमम के निर्देशन में एवं तेममं, सूरत के तत्त्वावधान में निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें परिणाम निम्नानुसार रहे–प्रथम स्थान प्रियंका जैन, द्वितीय स्थान अर्जुन मेड़तवाल एवं मनीषा बैद, तृतीय स्थान दीपमाला खोखावत एवं प्रोत्साहन पुरस्कार सरोज बांठिया रहे।

सभी विजेता प्रतियोगियों को तेरापंथ महिला मंडल, सूरत द्वारा मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में सम्मानित-पुरस्कृत किया गया।

# काव्यामृतम् काव्य प्रतियोगिता के ग्रांड फिनाले का आयोजन

**सूरत।**

अभातेमम के निर्देशन में तेममं द्वारा वीर नर्मद दक्षिण गुजरात यूनिवर्सिटी के कन्वेंशन हॉल में अष्टम् साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी द्वारा विरचित काव्य संग्रह पर आधारित 'काव्यामृतम' काव्य प्रतियोगिता के ग्रांड फिनाले का आयोजन हुआ। दर्शकों की शानदार उपस्थिति के बीच देश भर से समागत १५ संभागियों ने अपनी काव्य प्रस्तुति दी। अभातेमम अध्यक्ष नीलम सेठिया की अध्यक्षता में आयोजित कार्यक्रम में अभातेमम महामंत्री मधु देरासरिया, ट्रस्टी कनक बरमेचा, ट्रस्टी प्रकाश देवी तातेड़ की गरिमामय उपस्थिति रही।

अभातेमम सहमंत्री निधि सेखानी, पूर्व अध्यक्ष कुमुद कच्छारा, पूर्व महामंत्री एवं काव्यामृतम संयोजिका तरुण बोहरा, गुजरात प्रभारी श्रेया बाफना, अभातेमम कार्यकारिणी सदस्य निर्मला चिंडालिया, जयंती सिंधी, अदिति सेखानी, स्थानीय अध्यक्ष राखी बैद, मंत्री सीमा भोगर एवं स्थानीय संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों की उपस्थिति रही।

गुजरात सरकार के गृहराज्य मंत्री हर्ष सिंघवी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सुप्रसिद्ध कवियत्री डॉ० अनामिका अम्बर एवं डॉ० कीर्ति काले निर्णायक के रूप में उपस्थित थे। प्रसिद्ध गायिका सोनल पिपाड़ा ने विशेष प्रस्तुति दी। काव्यामृतम के विजेताओं में प्रथम नीतू कोठारी-राउरकेला, द्वितीय सलोनी भटेवरा-ब्यावर, तृतीय स्थान अभिलाषा डांगी-विजयनगर, बैंगलोर ने प्राप्त किया। प्रोत्साहन पुरस्कार विभा सुराणा-विशाखापट्टनम व संगीता बाफना-पालघर ने प्राप्त किया।

# चातुर्मासिक मंगल प्रवेश श्रावकत्व विकास कार्यशाला का आयोजन

**भुज।**

मुनि डॉ० पुलकित कुमार जी एवं मुनि आदित्य कुमार जी का दिव्य मैत्री रैली के साथ भुज तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक प्रवेश हुआ। इस अवसर पर गांधीधाम चातुर्मास करने वाले मुनि निकुंज कुमार जी एवं मुनि मार्दव कुमार जी की उपस्थिति रही।

कच्छ क्षेत्र से फतेहगढ़, रापर, गांधीधाम, अंजार, मुंद्रा, मांडवी, नारायणपर, माधापर आदि सभाओं से अच्छी संख्या में श्रावक समाज उपस्थित था। स्वागत समारोह के पश्चात कच्छ सौराष्ट्र स्तरीय श्रावकत्व विकास कार्यशाला तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में मुनिश्री के सान्निध्य में आयोजित हुई। कार्यक्रम में मंगलाचरण महिला मंडल, कन्या मंडल, स्वागत भाषण वाडीलाल मेहता, तेयुप से महेश गांधी, अस्मिता बाबरिया, नरेंद्र मेहता, सुरेश सुराणा आदि अनेक वक्ताओं ने गीत एवं वक्तव्य के द्वारा विचार प्रस्तुत किए।

कार्यशाला में मुनि पुलकित कुमार जी की विशेष प्रेरणा से पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री महाश्रमण जी को कच्छ की धरती पर चातुर्मास हेतु निवेदन की पाँच सदस्यीय एक कमेटी का गठन किया गया एवं अहमदाबाद में बड़े रूप में चातुर्मास अर्जी करने का निर्णय श्रावक समाज द्वारा लिया गया। तेयुप, भुज द्वारा कच्छ चातुर्मास अर्जी के संदर्भ में लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम का संचालन महेश मेहता, जीतूभाई सेठिया, आदर्श संघवी ने किया।

# आचार्य महाप्रज्ञ के १०३वें जन्म दिवस समारोह के आयोजन

## महान दार्शनिक एवं महान साहित्यकार थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ

**जोधपुर।**

जैन तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें आचार्य, महान दार्शनिक, महान साहित्यकार आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १०३वें जन्म दिवस का आयोजन तेरापंथ समाज द्वारा आयोजित किया गया। अणुव्रत समिति द्वारा सहभागिता दर्ज कराई गई।

रतननगर में शासनश्री साध्वी सत्यवती जी के सान्निध्य में आयोजित अभ्यर्थना व अंत्याक्षरी कार्यक्रम में व पावटा में शासनश्री कुंथुश्री जी व शास्त्रीनगर में साध्वी जिनबाला जी के सान्निध्य में आयोजित हुए अभिवंदना कार्यक्रम में अणुव्रत समिति अध्यक्षा सुधा भंसाली, शर्मिला, रूपचंद, भूपेश तातेड़ आदि ने अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

कार्यक्रम में सरदारपुरा व जोधपुर से सभा, तेयुप, महिला मंडल आदि के पदाधिकारियों व सदस्यों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर साध्वीवृंद द्वारा आचार्य महाप्रज्ञ जी के जीवन पर गीत और संभाषण द्वारा प्रकाश डाला।

इस अवसर पर पावटा स्थित हनवंत गार्डन में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी को अणुव्रत विशेषांक भेंट किया गया।

--------------------------------

## आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी एक महान अध्यात्म योगी थे

**टिटिलागढ़।**

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०३वाँ जन्म दिवस मुनि प्रशांत कुमार जी के सान्निध्य में मनाया गया। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी एक महान अध्यात्म योगी संत थे। वर्षों की उनकी योग साधना अत्यंत गहन थी। उनकी अंत:प्रज्ञा जागृत थी।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के साहित्य का एक विशाल पाठक संसार है, जो देश के हर भू-भाग में फैला हुआ है। उनका साहित्य पढ़ने वाले चाहे साहित्यकार हो, राजनीतिज्ञ हो, वैज्ञानिक हो या अन्य कोई भी हर किसी को ऐसा महसूस होता है कि यह पुस्तक जैसे मेरे लिए ही लिखी गई है।

मुनि मुदित कुमार जी ने कहा कि खुले आकाश में जन्म लेने वाले बालक नत्थु ने खुले आकाश जैसी ही विराटता को प्राप्त किया। मुनिश्री के मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। करिश्मा जैन, बगुमुंडा से केशवनारायण जैन, कृष्णा जैन, आनंद जैन, रूपचंद जैन, निर्मल चौधरी, ओमप्रकाश जैन ने गीत एवं वक्तव्य के द्वारा भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमुद कुमार जी ने किया।

--------------------------------

## एक महामानव ने मानवता के उत्थान के लिए अवतार लिया

**सेलम।**

एमजी रोड स्थित उत्तमचंद चोरड़िया के निवास स्थान पर आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का जन्म दिवस साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि एक महामानव ने मानवता के उत्थान के लिए अवतार लिया। माँ बालू की कुक्षि से नीले गगन के नीचे खुले आँगन में एक होनहार बालक ने जन्म लिया। कोई-कोई ऐसे विरले व्यक्ति होते हैं जो अपने पल-पल का यथार्थ उपयोग कर कहाँ से कहाँ पहुँच जाते हैं। उसका साक्षात् उदाहरण है—योगीराज आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी।

साध्वी सिद्धांतश्री जी एवं साध्वी दर्शितप्रभाजी ने संस्कृत गीत के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। साध्वी दर्शितप्रभा जी ने अपने आराध्य के प्रति श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

अभातेमम कार्यकारिणी सदस्या मंजुला डूंगरवाल, सभा अध्यक्ष राजेश भंसाली, महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष उच्छब डूंगरवाल, महिला मंडल, सेलम आदि ने गीत, कविता व वक्तव्य के माध्यम से अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सिद्धांतश्री जी ने किया।

--------------------------------

## प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान जैसे अनेक अवदान आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने दिए

**राजाराजेश्वरी नगर।**

शासनश्री साध्वी शिवमालाजी के सान्निध्य में आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के १०३वें जन्म दिवस को प्रज्ञा दिवस के रूप में मनाया गया। कन्या मंडल ने महाप्रज्ञ अष्टकम् द्वारा मंगलाचरण किया। सभाध्यक्ष मनोज डागा ने सभी का स्वागत किया। शासनश्री साध्वी शिवमाला जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी के अनुपम कर्तृत्व, विशाल व्यक्तित्व, कुशल नेतृत्व ने जनमानस को प्रभावित किया।

साध्वी अमितरेखा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने अतीत को उजारा, वर्तमान को संवारा, तेजस्वी बनाया, भविष्य के लिए नई परंपराओं का सृजन किया। प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान जैसे अवदान दिए।

साध्वी अर्हमप्रभा जी, साध्वी रत्नप्रभाजी ने आचार्यश्री के प्रति अपनी भावनाएँ समर्पित की। नवमनोनीत अध्यक्ष छत्रसिंह सेठिया, महिला मंडल अध्यक्षा लता बाफना, हेमलता सुराणा, सरोज आर बैद, पूनम दुगड़, सरोज बोथरा, अनिता बैद ने अपने भाव व्यक्त किए। महिला मंडल द्वारा गीतिका का संगान किया गया। संचालन साध्वी अमितरेखाजी ने किया। आभार ज्ञापन विक्रम महेर ने किया।

# अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

**भुज।**

तेयुप के निर्देशन में तेरापंथ किशोर मंडल, भुज ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में योगा क्लास माकपट समाज वाडी में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत डॉ० मुनि पुलकित कुमार जी ने नवकार मंत्र के उच्चारणों के द्वारा की गई। मुनि आदित्य कुमार जी ने एक घंटा तक अलग-अलग प्रकार के योग के साथ ध्यान भी करवाया। इस योगा कार्यक्रम में ३७ सदस्य उपस्थित रहे। आभार ज्ञापन तेयुप संगठन मंत्री आदर्श संघवी ने किया।

# संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन जैन विधि - अमूल्य निधि

## नूतन गृह प्रवेश

**साउथ हावड़ा।**

श्रीडूंगरगढ़ निवासी, साउथ हावड़ा प्रवासी मोहनलाल-मगनी देवी भादानी के सुपुत्र राकेश-सुधा भादानी के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक बजरंगलाल डागा और सुशील बाफना ने संपूर्ण विधि एवं मंत्रोच्चार द्वारा संपादित करवाया।

परिवार से स्नेहा भदानी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए परिषद एवं संस्कारकों का आभार व्यक्त किया। सभा के उपाध्यक्ष लक्ष्मीपत बाफना एवं सभा ट्रस्टी जंवरीलाल नाहटा ने अपने विचार व्यक्त किए। सह-संयोजक नवीन सेठिया ने भादानी परिवार का आभार ज्ञापन किया।

## विवाह संस्कार

**गंगाशहर।**

झांसी निवासी, राजकुमार कुशवाह की सुपुत्री वर्षा का शुभ विवाह बीकानेर निवासी इंद्रचंद कोचर के सुपुत्र अक्षय कोचर के साथ जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। अभातेयुप संस्कारक रतनलाल छलाणी और देवेंद्र डागा ने विवाह संस्कार विधि-विधानपूर्वक मांगलिक मंत्रोच्चार द्वारा संपन्न करवाया।

तेयुप, गंगाशहर से देवेंद्र डागा ने दोनों परिवारों को बधाई प्रेषित की।

## विवाह संस्कार

**नोखा।**

देशनोक निवासी जयचंदलाल भूरा की सुपुत्री समता का विवाह नोखा निवासी झंवरलाल बैद के सुपुत्र अरिहंत बैद के साथ जैन संस्कार विधि से संपन्न हुआ। संस्कारक इंदरचंद बैद एवं गोपाल लुणावत ने विधिवत जैन संस्कार विधि का महत्त्व बताया।

बड़ी संख्या में गणमान्यजनों ने उपस्थित होकर नवदंपति को मंगलास्नेह से अभिषिक्त किया।

## नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

**अहमदाबाद।**

संदीप कुमार गणपत लाल बालड़ के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से किया गया। संस्कारक दिनेश बागरेचा, विजय छाजेड़ एवं संजय बुरड़ ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ विधि को संपादित किया। तेयुप मंत्री दिलीप भंसाली ने बालड़ परिवार के प्रति मंगलकामनाएँ प्रेषित की।

कार्यक्रम का संचालन संस्कारक सह-संयोजक दिनेश बागरेचा ने किया। संदीप बालड़ ने परिषद एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

## नूतन गृह प्रवेश

**अहमदाबाद।**

मांगीलाल रमेश कुमार दिलीप कुमार भंसाली के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक आनंद बोथरा, जागृत दुगड़, संजय बुरड़ ने सामुहिक मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ संपादित किया।

परिषद की ओर से मंगलभावना पत्र भेंट की गई। परिवार की ओर से डॉ० रमेश भंसाली ने तेयुप एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन संस्कारक जागृत दुगड़ ने किया।

## विवाह संस्कार

**अहमदाबाद।**

अजय (सुपुत्र केशरीचंद भंसाली) का शुभ विवाह जिज्ञासा (सुपुत्री स्व० धनराज-प्रभा देवी डोसी) के साथ जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक डालिमचंद नौलखा, सह-संस्कारक विक्रम दुगड़, आनंद बोथरा, जागृत दुगड़ एवं अरविंद संकलेचा के साथ विविध संकल्पों से विवाह विधि को संपादित किया।

परिषद की ओर से डोसी परिवार एवं भंसाली परिवार को मंगलभावना पत्र भेंट किया। भंसाली परिवार से केशरीचंद एवं डोसी परिवार से धनराज बेगवानी ने तेयुप एवं संस्कारकों के प्रति आभार व्यक्त किया।

✦ बाल पीढ़ी को लौकिक विद्या के साथ अलौकिक विद्या (आध्यात्मिक विद्या) का भी शिक्षण और प्रशिक्षण मिलना चाहिए।
—आचार्यश्री महाश्रमण

# शपथ ग्रहण समारोह के आयोजन

## जोधपुर

तेरापंथी सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष पन्नालाल कागोत एवं उनकी कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन जाटाबास, जोधपुर में संपन्न हुआ। साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। शपथ ग्रहण जैन संस्कार विधि से संस्कारक अभातेयुप के संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी एवं संस्कारक निर्मल छल्लाणी ने विधिपूर्वक संपन्न करवाया।

महासभा के उपाध्यक्ष विजयराज मेहता ने नवनिर्वाचित अध्यक्ष पन्नालाल कागोत को पद की शपथ दिलाई। अध्यक्ष पन्नालाल कागोत ने अपनी नई टीम घोषित की एवं शपथ ग्रहण करवाई।

शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि निवर्तमान टीम ने अच्छा कार्य किया एवं नवनिर्वाचित टीम अच्छा कार्य करे, अपने धर्मसंघ के प्रति पूर्ण समर्पित होकर धर्मसंघ की सेवा में योगदान दें।

इस अवसर पर सभा सदस्यों द्वारा मंगलाचरण किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया गया। तेयुप अध्यक्ष मितेश जैन, महिला मंडल मंत्री रीना जैन, महासभा उपाध्यक्ष विजयराज मेहता, अभातेयुप संगठन मंत्री श्रेयांस कोठारी, अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुधा भंसाली, घीसुलाल अब्बाणी, रतनलाल कागोत, शांतिलाल चौपड़ा, पारसमल संचेती एवं श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे। साध्वीवृंद द्वारा सामुहिक संगान किया गया। आभार ज्ञापन मंत्री दिलीप मालू व कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष महेंद्र मेहता ने किया।

## विरार

साध्वी प्रज्ञाश्री जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा एवं तेयुप, विरार का शपथ ग्रहण समारोह तेरापंथ भवन विरार पश्चिम में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के नमस्कार महामंत्र से हुई। महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। प्रभारी निर्मल जेन एवं तेयुप सदस्यों ने विजय गीत का संगान किया।

साध्वी विनयप्रभाजी एवं साध्वी प्रतीकप्रभाजी ने गीतिका प्रस्तुत की।

सभा अध्यक्ष रमेश हिंगड़ ने सभी का स्वागत किया। नव मनोनीत तेयुप अध्यक्ष हेमंत धाकड़ ने मुख्य अतिथि सहित सभी से सहयोग की अपील की।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी ने कहा कि हम नैतिकता के साथ ही आगे बढ़ सकते हैं। उन्होंने कहा कि हमें अपने अंदर विश्वास लाना है। अहिंसा के पालन पर जोर देते हुए कहा कि अहिंसा को सूक्ष्मता से समझें तभी स्वस्थ समाज बना सकते हैं।

विधायक एवं लोकनेता हितेंद्र ठाकुर ने अपने विचार रखे।

तेयुप अध्यक्ष हेमंत धाकड़ ने अपनी नवमनोनीत कार्यकारिणी टीम को शपथ दिलाई। उसके बाद सभा अध्यक्ष रमेश हिंगड़ ने अपनी कार्यकारिणी की घोषणा की और शपथ दिलाई।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में लोकनेता एवं स्थानीय विधायक हितेंद्र ठाकुर उपस्थित थे। साथ ही विशेष अतिथि पूर्व सभापति जीतूभाई शाह, पंकज ठाकुर, नयन जैन, सभा प्रभारी निर्मल जैन, परिषद प्रभारी अभातेयुप सदस्य जितेंद्र परमार, अभातेयुप किशोर मंडल, राष्ट्रीय सहप्रभारी मयंक धाकड़, अणुव्रत समिति, मुंबई अध्यक्षा कंचन सोनी, अभातेमं, महाराष्ट्र प्रभारी तरुणा बोहरा उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन सभा के मंत्री अजयराज फुलफगर ने किया।

## नोखा

स्थानीय महावीर चौक स्थित तेरापंथ भवन में तेयुप, नोखा की नवगठित टीम का शपथ ग्रहण कार्यक्रम शासन गौरव साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में संपन्न हुआ। परिषद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष गजेंद्र पारख ने अपनी टीम की घोषणा की।

तेयुप की नव निर्वाचित टीम को निवर्तमान अध्यक्ष रूपचंद बेद ने शपथ ग्रहण करवाई। अध्यक्ष गजेंद्र पारख एवं मंत्री अरिहंत सुखलेचा ने युवकों से आध्यात्मिक एवं नैतिकतापूर्ण जीवन जीने पर जोर दिया।

कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी राजीमती जी ने अपने पाथेय में टीम के प्रति मंगलकामना एवं आशीर्वाद प्रदान किया। शासनश्री साध्वी समताश्री जी ने ध्यान के द्वारा जीवन के लक्ष्य को समझाया।

तेयुप सभा अध्यक्ष निर्मल कुमार भूरा, उपाध्यक्ष इंद्रचंद बैद, तोलाराम घीया, मांगीलाल संचेती, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु देवी बैद, पुष्पादेवी पारख आदि उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों ने नई टीम को बधाई और आगामी कार्यकाल के लिए शुभकामनाएँ दी। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री अरिहंत सुखलेचा ने किया।

## अयनावरम, चेन्नई

मुनि सुधाकर जी के सान्निध्य में तेयुप, चेन्नई के नवमनोनीत अध्यक्ष विकास कोठारी के नेतृत्व में नवगठित तेयुप की टीम का शपथ ग्रहण और 'हमारा संघ, हमारा दायित्व' विषय पर कार्यशाला का आयोजन श्री जैन दादावाड़ी, अयनावरम के प्रांगण में किया गया।

मुनि सुधाकर जी ने कहा कि हमारी साधना संघीयबद्ध है, हम सौभाग्यशाली हैं कि हमें मनुष्य जन्म मिला। हम भाग्यशाली है कि हमें जैन कुल मिला एवं उसमें हमें गौरवशाली तेरापंथ धर्मसंघ मिला।

नवमनोनीत तेयुप अध्यक्ष विकास कोठारी के साथ टीम को मुनिश्री ने पावन पाथेय प्रदान किया।

मुनि नरेश कुमार जी ने गीत के संगान के साथ कहा कि जो विनय, व्रत, संयम का सम्यक् पालन करता है, उसका जीवन मंगल होता है।

इससे पूर्व नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ कार्यक्रम में युवा साथियों ने विजय गीत का संगान किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन तेयुप पूर्वाध्यक्ष एमजी बोहरा ने किया। महिलाओं ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया। तेयुप पूर्वाध्यक्ष गजेंद्र बोहरा ने नवमनोनीत पदाधिकारियों का परिचय दिया। निवर्तमान अध्यक्ष मुकेश नवलखा ने शुभाशंसा के साथ नवनिर्वाचित अध्यक्ष को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाने के साथ दायित्व हस्तांतरण किया।

नवनिर्वाचित अध्यक्ष विकास कोठारी ने अभातेयुप के त्रिआयामों—सेवा, संस्कार, संगठन के विभिन क्षेत्रों में विशिष्ट कार्य करने की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा अपने पदाधिकारियों एवं कार्यसमिति सदस्यों का चयन करते हुए उन्हें शपथ ग्रहण करवाई।

तेरापंथी महासभा से ज्ञानचंद आंचलिया, तेरापंथ सभाध्यक्ष उगमराज सांड, तेरापंथ ट्रस्ट बोर्ड साहूकारपेट के प्रबंध न्यासी विमल चिप्पड़, तेरापंथ ट्रस्ट बोर्ड मादावरम के प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा, महिला मंडल उपाध्यक्ष अलका खटेड़, टीपीएफ प्रेसिडेंट, राकेश खटेड़, अणुव्रत समिति अध्यक्ष ललित आंचलिया, अभातेयुप जैन संस्कारक स्वरूपचंद दांती ने शुभकामनाएँ एवं बधाई दी। कार्यक्रम का संचालन उपाध्यक्ष विशाल सुराणा ने तथा आभार ज्ञापन मंत्री संदीप मूथा ने किया।

## इस्लामपुर

साध्वी संगीतश्री जी के सान्निध्य में तेयुप के नव निर्वाचित अध्यक्ष विजय दुगड़ को निवर्तमान अध्यक्ष राकेश धाड़ेवा ने शपथ दिलाई एवं अभातेयुप सदस्य विकास बोथरा ने सम्मानित किया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने अपनी टीम की घोषणा करते हुए अपने पदाधिकारियों को शपथ ग्रहण करवाई।

साध्वी संगितश्री जी के मंगल उद्‌बोधन से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। साध्वीश्री जी ने मंगलपाठ सुनाया एवं संघ के प्रति निष्ठा के अनुकूल कार्य करने की प्रेरणा दी।

उपस्थित वक्ता थे—युवावाहिनी के राष्ट्रीय प्रभारी विकास बोथरा, तेरापंथ सभा के अध्यक्ष लक्ष्मीपत गोलछा, नव निर्वाचित अध्यक्ष नरेंद्र बैद, अणुव्रत समिति अध्यक्ष शकुंतला देवी दुगड़, तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष राकेश धाड़ेवा, श्रावक समाज एवं समस्त युवा साथी। सभी ने शुभकामनाएँ प्रेषित की।

साध्वी कमलविभा जी ने दायित्व का अर्थ समझाते हुए अपने-अपने दायित्व का निर्वाहन करने की प्रेरणा दी। मंत्री मुदित पींचा ने साध्वीश्री जी एवं उपस्थित श्रावक समाज का आभार ज्ञापन किया।

## तिरुपुर

साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा एवं तेयुप का सामुहिक शपथ ग्रहण समारोह जैन संस्कार विधि से आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी के मुखारविंद से नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ हुई। संस्कारक चेतन बरड़िया ने जैन संस्कार विधि के महत्त्व को समझाया। चेतन के साथ संस्कारक जितेंद्र भंसाली एवं प्रेम डाकलिया द्वारा मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम संपादित किया गया।

दोनों ही संस्था के नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने शपथ ग्रहण की और इसके बाद अपनी कार्यकारिणी को शपथ ग्रहण करवाई। उपस्थित जनसमुदाय को प्रेरित करते हुए साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी ने मंगल उद्‌बोधन प्रस्तुत किया।

स्थानीय तेरापंथ सभा एवं परिषद द्वारा जैन संस्कार विधि की सराहना की गई। साध्वीश्री जी ने अपने कर्म एवं कर्तव्य की भावना को समझाया एवं दोनों नवनिर्वाचित टीमों को अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

## पूर्वांचल-कोलकाता

तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता के नव मनोनीत अध्यक्ष राजीव खटेड़ व उनकी कार्यकारिणी का शपथ ग्रहण समारोह तुलसी वाटिका, लेकटाउन कोलकाता में आयोजित किया गया। राजीव व उनकी कार्यकारिणी ने साध्वी स्वर्णरेखाजी के सान्निध्य में में ली गई। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ हुआ। कार्यक्रम का संचालन मंत्री हेमंत बैद ने किया।

तेयुप में पहली बार पूरी कार्यकारिणी को जैन संस्कार विधि द्वारा शपथ दिलाई गई। जैन संस्कारक की भूमिका विजयराज बरमेचा, पुष्पराज सुराणा, सुमेरमल बैद, पंकज आंचलिया, अनूप गंग ने निभाई। निवर्तमान अध्यक्ष विकास सिंघी ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया। नव मनोनीत अध्यक्ष को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

अध्यक्ष राजीव खटेड़ ने अपना वक्तव्य रखते हुए परिषद के विकास को और भी गतिमान करने का संकल्प लिया तथा नवगठित कार्यकारिणी की घोषणा की।

कार्यक्रम में विशेष रूप से पूर्वांचल तेयुप के पूर्वाध्यक्ष रतन श्यामसुखा, आलोक बरमेचा, पूर्व मंत्री रवि दुगड़, पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय सिंघी, सहित अन्य सभा-संस्थाओं पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

## मदुरै

स्थानीय तेरापंथ भवन में तेयुप का शपथ ग्रहण समारोह का शुभारंभ तेयुप के विजय गीत के संगान के साथ हुआ। तेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष संदीप बोकड़िया ने सभी का स्वागत किया। तेयुप के नवमनोनीत अध्यक्ष जितेंद्र चोपड़ा को शपथ दिलाई। तेयुप के नवनिर्वाचित अध्यक्ष जितेंद्र चोपड़ा ने अपनी नवगठित टीम को शपथ दिलाई।

तेयुप के नवनिर्वाचित अध्यक्ष जितेंद्र चोपड़ा ने सभी का स्वागत करते हुए वक्तव्य में अपने विचार रखे। तेरपंथ सभा अध्यक्ष अशोक कुमार जीरावला, शांतिलाल बुरड़, उपासक धनराज लोढ़ा, अमृत चोपड़ा आदि ने तेयुप की नवगठित टीम को बधाई प्रेषित की।

तेरापंथ सभा के वरिष्ठ जूठमल बोकड़िया, मोहनलाल तातेड़, नया सुमतिनाथ जैन संघ के ट्रस्टी जवाहरलाल बाफना, राजेंद्र चोपड़ा, युवा पत्रकार आईजा अध्यक्ष दिनेश तथा अन्य पदाधिकारी एवं सदस्यों ने नवगठित टीम को बधाई प्रेषित करते हुए सम्मान किया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप के निवर्तमान मंत्री राजकुमार नाहटा ने किया। तेयुप के नवमनोनीत मंत्री अभिषेक कोठारी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

# साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी अभ्यर्थना समारोह

**तिरुपुर।**

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी का अभिवंदना समारोह साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। साध्वीश्री जी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री जी की पुण्याई इतनी प्रबल रही कि इन्होंने संस्था काल से लेकर अब तक अपने सक्षम नेतृत्व के द्वारा सबको दिशा दी है, दृष्टि दी है और क्षमताओं को उजागर करने हेतु प्रेरणा दी है।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि तेरापंथ साध्वी समाज का यह सौभाग्य रहा है कि युगीन संदर्भ में युगीन साध्वीप्रमुखाओं का नेतृत्व प्राप्त होता रहा है।

साध्वी प्रबोधयशाजी ने कहा कि साध्वीप्रमुखाश्री जी अनुशासनप्रिय हैं, उनका अपना जीवन अनुशासित है। साध्वी सम्मतिप्रभाजी एवं साध्वी धैर्यप्रभाजी ने अपने भाव व्यक्त किए। इसी क्रम में सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया, संतोष सिंघवी, महिला मंडल मंत्री प्रीति भंडारी, रंजना भंसाली, नीता सिंधवी, सरिता श्यामसुखा ने भी अभ्यर्थना में अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल की बहनों ने गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का प्रारंभ नमस्कार महामंत्र द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री प्रीति भंडारी द्वारा किया गया।

# आचार्यश्री तुलसी के २६वें महाप्रयाण दिवस के आयोजन

## आचार्य तुलसी संयम और तप के पुरोधा पुरुष थे

**कटक।**

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी का २६वाँ महाप्रयाण दिवस समारोह तेरापंथ सभा के तत्त्वावधान में विशाल अपार्टमेंट के प्रांगण में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि अध्यात्म के क्षेत्र में संयम और तप में पराक्रम करने वाला विशिष्ट पुरुष होता है। आचार्य तुलसी संयम और तप के पुरोधा पुरुष थे। वे भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल नक्षत्र थे। वे मानवता के मसीहा, शांति के पैगंबर थे। वे विकास के श्लाका पुरुष थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल द्वारा तुलसी अष्टकम् के मंगलाचरण से हुआ। तेरापंथ कन्या मंडल की उपाध्यक्ष इंद्र लुणिया ने प्रश्न पुस्तिका भेंट की। तेरापंथी सभा के मंत्री चैनराज चोरड़िया, तेयुप के अध्यक्ष भैरव दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन सहमंत्री इंद्र कुमार दुगड़ ने व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

इस अवसर पर तुलसी मंत्र का जप भी किया गया। कार्यक्रम में शिविरार्थी बालक-बालिकाओं के अतिरिक्त अच्छी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष संयोजक रणजीत दुगड़ आदि का योगदान रहा।

## आचार्यश्री तुलसी का महाप्रयाण दिवस

**मदुरै।**

स्थानीय तेरापंथ भवन में तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में नारी जाति के उन्नायक गणाधिपति गुरुदेवश्री तुलसी का महाप्रयाण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से हुई। ॐ तुलसी जय तुलसी का जाप किया गया। तत्पश्चात मधु पारख, नेहा दुधेड़िया, संतोष बोकड़िया, डिनल कोठारी, सुनीता कोठारी, सहमंत्री लता कोठारी, मंत्री दीपिका फुलफगर ने गीतिका, कविता आदि द्वारा अपने भाव व्यक्त किए।

साथ ही लेख प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें पहला स्थान दीपिका फुलफगर, दूसरा स्थान मधु पारख एवं नेहा दुधेड़िया और तृतीय स्थान संतोष बोकड़िया को मिला। निर्णायकगण की भूमिका अध्यक्ष नयना पारख ने की। अंत में सामुहिक संगान किया गया।

## आचार्यश्री तुलसी आध्यात्मिक संस्कृति के उन्नायक थे

**गांधीनगर।**

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा कि आज तेरापंथ धर्मसंघ के नवमें अधिशास्ता मानवता के मसीहा राष्ट्रसंत आचार्यश्री तुलसी का महाप्रयाण दिवस है। आचार्यश्री तुलसी मात्र २२ वर्ष की उम्र में धर्मसंघ में अष्टम् आचार्य श्री कालूगणी द्वारा आचार्य पद पर मनोनीत किए गए। उन्होंने ५८ वर्ष तक विशाल धर्मसंघ का विलक्षण नेतृत्व किया। आचार्यश्री तुलसी का जीवन महान ग्रंथ है, जिनके हर पृष्ठ का एक-एक अक्षर स्वर्ण जड़ित है। हम उनके चरणों में श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

शासनश्री साध्वी मंजुरेखाजी ने कहा कि तेरापंथ धर्मसंघ के लगभग ७५० साधु-साध्वियाँ एक आचार्य की अनुशासना में समर्पित हैं, वह सभी प्रबुद्ध हैं। साध्वी उदितप्रभाजी, साध्वी निर्भयप्रभाजी, साध्वी चेलनाश्री जी ने अपने आराध्य के प्रति भावांजलि दी।

सभा अध्यक्ष सुरेश दक ने स्वागत वक्तव्य दिया। सभा नव निर्वाचित अध्यक्ष कमल दुगड़, ट्रस्ट उपाध्यक्ष माणक मूथा, महासभा से प्रकाश लोढ़ा, पारमार्थिक शिक्षण संस्था अध्यक्ष बजरंग जैन, अणुविभा संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़, महिला मंडल गांधीनगर अध्यक्षा स्वर्णमाला पोखरणा, टी-दासरहल्ली अध्यक्षा रेखा मेहर, अणुव्रत समिति मंत्री माणक संचेती, तेयुप टी-दासरहल्ली अध्यक्ष दिलीप पोखरणा सहित अनेक गणमान्य जनों ने भाव व्यक्त किए।

महिला मंडल बहनों ने संवाद प्रस्तुत किया। जिसका संचालन महिला मंडल मंत्री सरस्वती बाफना ने किया। कार्यक्रम का संचालन नवनीत मूथा ने किया। इस अवसर पर बैंगलोर के अनेकों क्षेत्रों से श्रावक-श्राविका समाज उपस्थित रहे।

## सहजयोग के साधक थे आचार्यश्री तुलसी

**मोखुंदा।**

श्री वर्धमान स्थानक, मोखुंदा में साध्वी प्रांजल प्रभाजी , साध्वी रुचिप्रभाजी एवं साध्वी गौतमप्रभाजी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी की २६वीं पुण्यतिथि का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के द्वारा किया गया। स्थानीय महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण किया गया। मोहनलाल पोखरना अतिथियों का स्वागत किया।

साध्वी प्रांजलप्रभाजी ने आचार्यश्री तुलसी के बारे में कहा कि गुरुदेवश्री तुलसी हर परिस्थिति में दर्पण की तरह तटस्थ एवं निर्लिप्त रहे।

तेरापंथ सभा आमेट के अध्यक्ष देवेंद्र मेहता, आमेट अणुव्रत समिति के अध्यक्ष दलीचंद कच्छारा, महिला मंडल की अध्यक्ष मीना गेलड़ा, राजाबाबू, उपासिका शांता जैन ने अपने आराध्य के प्रति गीतिका संभाषण द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वी गौतमप्रभाजी ने गीतिका द्वारा आचार्यश्री तुलसी के अवदानों को प्रस्तुत किया। स्थानीय मोखुंदा तेरापंथ सभा के अध्यक्ष कन्हैयालाल गुलिया ने आभार ज्ञापन किया। आमेट, लावासरदारगढ़, जिल्लोला, अगरिया आदि क्षेत्रों से अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई साध्वी रुचिप्रभाजी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

## स्मृति के आईने में आचार्यश्री तुलसी

**पनवेल।**

पनवेल जैन स्थानक में शासनश्री साध्वी कैलाशवती जी के सान्निध्य में तेयुप द्वारा गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी का २६वाँ महाप्रयाण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वी पंकजश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र द्वारा हुई। पनवेल तेयुप के अध्यक्ष संजय बाफना ने सभी का स्वागत किया। पनवेल महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण व गीतिका प्रस्तुत की गई। ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा लघु नाटिका द्वारा गुरुदेव के जीवन चरित्र बताया गया।

साध्वी ललिताश्री जी, साध्वी पंकजश्री जी, साध्वी साम्यक्त्वयशा जी ने अपने प्रवचन में समस्त समाज से गुरुदेव तुलसी के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाने की प्रेरणा दी। नेरुल से उपस्थित गायिका अनिता सियाल ने गीतिका प्रस्तुत की।

पनवेल शहर भाजपा व्यापारी प्रकोष्ठ अध्यक्ष विनोद बाफना, मुंबई महिला मंडल मंत्री अल्का मेहता, वाशी तेयुप अध्यक्ष महावीर जैन कोपर खैरना मंत्री संदीप आच्छा मूर्तिपूजक संघ के अध्यक्ष मोतीलाल जैन, प्रवक्ता उपाशिका तारा चौधरी, उपाशक मुकेश चोरड़िया, विनोद खाब्या आदि ने अपने विचार रखे।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने में परामर्शक दिनेश चौधरी अनिल संचेती, महावीर बाफना, तेयुप मंत्री रवि बाफना, महिला मंडल संयोजिका टीना संचेती, सह-संयोजिका कल्पना बाफना, रचना बाफना, रायगढ़, अणुव्रत संयोजक राजेश मेहता सहित कई कार्यकर्ताओं का सहयोग रहा। कार्यक्रम का संचालन साध्वी शारदाप्रभाजी ने किया और अंत में आभार तेयुप के पूर्व मंत्री शिव देवड़ा ने किया। गुरुदेव की पुण्यतिथि पर पनवेल तेरापंथ भवन में ५१ सामुहिक एकाशन किए गए।

## गुरुदेवश्री तुलसी कौशल के कल्पवृक्ष थे

**सिकंदराबाद।**

मारडपल्ली तातेड़ भवन में साध्वी त्रिशला कुमारी जी के सान्निध्य में आचार्यश्री तुलसी की पुण्यतिथि का कार्यक्रम तेरापंथी सभा के तत्त्वाधान में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आगाज बबीता एवं लेखा बैद की गीतिका से हुआ। सभा अध्यक्ष बाबूलाल बैद ने गुरुदेव श्री तुलसी के अवदानों की चर्चा करते हुए गुरुदेव के श्रीचरणों में श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

महिला मंडल अध्यक्ष अनीता गीड़िया ने नारी जाति के उन्नायक गुरुदेव श्री तुलसी को भावांजलि अर्पित की। तेयुप अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा ने अपने विचार व्यक्त किए। साध्वी संप्रतिप्रभाजी ने वक्तव्य दिया। साध्वी रश्मिप्रभाजी ने गीत प्रस्तुत किया। भिक्षु भजन मंडली के संगायक नवनीत छाजेड़ और उनकी टीम ने गीत का सामुहिक संगान किया। ज्ञानशाला के बालक-बालिकाओं ने प्रस्तुति दी। टीपीएफ के अध्यक्ष मोहित बैद, विनोद संचेती ने अपने विचार व्यक्त किए।

साध्वी त्रिशला कुमारी जी ने कहा कि आचार्यश्री तुलसी के विराट व्यक्तित्व को शब्दों की सीमा में बाँधना नामुमकिन है। उनके विराट व्यक्तित्व के कुछ टिप्स हमारे जीवन के लिए बहुत उपयोगी हैं।

साध्वी कल्पयशाजी ने कहा कि नवीनता और प्राचीनता के अद्भुत संगम का नाम है—गुरुदेव तुलसी। कार्यक्रम में महासभा के प्रभारी लक्ष्मीपत बैद ने अपने विचार प्रस्तुत किए। आदित्य राज तातेड़ भवन के पदाधिकारी महावीर तातेड़ आदि सदस्यों का सम्मान सभा के पदाधिकारियों ने किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रकाश भंडारी ने कहा कि अणुव्रतों को अपनाकर ही हम गुरुदेव श्री तुलसी के बताए मार्ग का अनुसरण कर सकते हैं। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पयशाजी ने किया तथा आभार सभा के मंत्री सुशील संचेती ने किया।

## आचार्यश्री तुलसी का महाप्रयाण दिवस

**तिरुपुर।**

अभातेममं द्वारा निर्देशित तिरुपुर तेममं द्वारा गुरुदेव श्री तुलसी के २६वें महाप्रयाण दिवस को विसर्जन दिवस के रूप में तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ संतोष आंचलिया ने तुलसी अष्टकम् द्वारा किया गया। गीत का सामुहिक संगान किया गया। अध्यक्ष सीमा सामसुखा ने सभी का स्वागत किया।

सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया ने गुरुदेव के प्रति श्रद्धा स्वर अर्पित किए। आचार्यश्री तुलसी के जीवन पर कथानक की प्रस्तुति उपासिका मधु कोठारी द्वारा दी गई। रंजना भंसाली ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन मंत्री प्रीति भंडारी ने किया।

महिला मंडल द्वारा रात्रिकालीन कार्यक्रम में अभिनव अंत्याक्षरी का आयोजन किया गया। उपाध्यक्षा नीता सिंघवी एवं मंत्री प्रीति भंडारी द्वारा अनेक राउंड में रोचक रूप से अंत्याक्षरी खिलवाई गई। जिसमें सभा एवं तेयुप के भाइयों एवं महिला मंडल की बहनों ने हिस्सा लिया।

आचार्यश्री तुलसी पर आधारित लेख प्रतियोगिता में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतियोगी एवं भाग लेने वाले सभी संभागियों को पुरस्कृत किया गया। आभार ज्ञापन मंत्री प्रीति भंडारी ने किया।

## आचार्यश्री तुलसी का महाप्रयाण दिवस

**सेलम।**

अभातेममं के तत्त्वावधान में महिला मंडल द्वारा साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में राष्ट्रीय अध्यक्ष नीलम सेठिया, रा०का० सदस्य मंजुला डूंगरवाल की उपस्थिति में आचार्यश्री तुलसी का २६वाँ महाप्रयाण दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री जी द्वारा नमस्कार महामंत्र से हुई। तेममं ने तुलसी अष्टकम् की प्रस्तुति दी।

साध्वी लावण्यश्री जी ने कहा कि तेरापंथ का नवम् महासूर्य अचानक हम सबकी आँखों से ओझल हो गया, अस्त हो गया। उनका नाम अनेक विशेषताओं का पुंज था। साध्वी सिद्धांतश्री जी व साध्वी दर्शितप्रभाजी ने तुलसी सद्गुण अक्षरमाला का एक अक्षर प के बारे में रोचक प्रस्तुति दी। अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्षा नीलम सेठिया ने विसर्जन दिवस का आगाज किया। महिला मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी।

केवलचंद बोहरा, शर्मिला सिंधवी, कंचन सेठिया, महावीर डूंगरवाल ने आचार्यश्री तुलसी के प्रति अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के बच्चों ने प्रस्तुति से सबका मन मोह लिया। तेयुप द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई।

महिला मंडल अध्यक्षा सुनीता बोहरा, सभा मंत्री प्रवीण बोहरा, तेरापंथी ट्रस्ट अध्यक्ष वीरेंद्र सेठिया ने श्रद्धांजलि दी। सौरव बैद ने गीतिका प्रस्तुत की। रात्रिकालीन कार्यक्रम 'आओ जानें तुलसी' प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। गुरुदेव तुलसी द्वारा निर्मित पाँच परिषद विकास, कल्याण, बहुश्रुत, युवक, मित्र इन नामों से प्रतियोगिता के ग्रुप बने उसमें युवक, मित्र, कल्याण ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस कार्यक्रम की आयोजना में अक्षिता बैद ने परिश्रम किया।

✦ *व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।*

—आचार्यश्री महाश्रमण

# चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के आयोजन

## तारानगर

साध्वी पुण्यप्रभाजी एवं सहवर्ती साध्वीवृंद ने चातुर्मास हेतु तारानगर में स्थित सेठिया भवन, तारानगर में मंगल प्रवेश किया। तेरापंथी सभा, तेयुप, तेमम एवं तेरापंथ समाज के अन्य कई श्रावकों ने श्रीकृष्ण माँ जालपा भवानी गौशाला से लेकर सेठिया भवन तक जुलूस एवं आध्यात्मिक, धार्मिक गीतों के गायन के साथ स्वागत किया।

साध्वीश्री जी ने सेठिया भवन में पधारने के पश्चात स्वागत कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें तेरापंथ युवक परिषद, तेमम एवं मोनिका बोथरा द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया।

साध्वी जिनयशाजी, साध्वी चारूलता जी ने अपने भाव प्रस्तुत किए तथा विराजमान साध्वीवृंद के द्वारा सामुहिक गीत का गायन किया गया। कमल लुनिया ने वक्तव्य के माध्यम से भाव प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के अंत में सभा मंत्री मांगीलाल बरमेचा ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संयोजन हितेश सुराणा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के मंत्री मांगीलाल बरमेचा, तेयुप के अध्यक्ष मनीष बोथरा, तेमम की अध्यक्षा सरोज देवी बरमेचा, मंत्री मोना चोरड़िया, तेमम के सदस्य एवं तेयुप सदस्य के साथ समाज के अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। साध्वीश्री के मुखारविंद से मंगलपाठ के पश्चात कार्यक्रम संपन्न हुआ।

## कोयंबटूर

चातुर्मास का समय त्याग, तपस्या एवं निर्जरा का समय हैं इस समय लोगों को ज्यादा से ज्यादा समय धर्मानुष्ठान में लगाना चाहिए। उक्त विचार साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी ने तेरापंथ भवन में चातुर्मासिक प्रवेश के समय व्यक्त किए।

इस अवसर पर साध्वी अनुप्रेक्षाश्री ने कहा कि चातुर्मासिक प्रवेश हुआ है। अब हमें आध्यात्मिक प्रवेश करना है। इस अवसर पर साध्वीवृंद ने सामुहिक गीतिका प्रस्तुत की।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष प्रकाश बोथरा, तेयुप, महिला मंडल अध्यक्षा मंजु गीड़िया, अणुव्रत समिति से मुकेश बोथरा, तेरापंथ ट्रस्ट से आलोक दुगड़, महासभा कार्यकारिणी सदस्य अजय बुच्चा, मुमुक्षु पथ की ओर अग्रसर अंजली सिंघवी, अभातेयुप जेटीएन प्रभारी चेन्नई के संतोष सेठिया, नेत्रदान प्रभारी कोमल डागा, तेयुप प्रभारी सोनू डागा, मोहनलाल बुच्चा, तिरुपुर सभा के मंत्री भंसाली ने अपने विचार गीतिका एवं वक्तव्यों के माध्यम से प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा, ईरोड का शपथ ग्रहण का कार्यक्रम आयोजित था। महासभा कार्यकारिणी सदस्य अजय बुच्चा ने शपथ दिलाई। कार्यक्रम का संचालन हेमा भंसाली ने किया।

## रायपुर

समणी निर्देशिका कमलप्रज्ञा जी, समणी करुणाप्रज्ञा जी, समणी सुमनप्रज्ञा जी का चातुर्मासिक मंगल प्रवेश तेरापंथ अमोलक भवन में शोभायात्रा की परिसंपन्नता के साथ स्वागत समारोह के रूप में हुआ।

स्वागत समारोह में तेमम द्वारा मंगलाचरण पश्चात गौतम गोलछा, सरिता सेठिया, विपुल जैन, जीतमल जैन, मनीष दुगड़, विनोद बरलोटा, प्रतिभा पोकरणा, सुनीता बैंगानी, प्रशांत कोठारी द्वारा स्वागत संबोधन व्यक्त किया गया। समारोह में तीनों समणीवृंदों का मंगल पाथेय उपस्थित समाजजनों को प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम का संचालन सरिता बरलोटा व आभार वीरेंद्र डागा ने प्रकट किया। समारोह में समाजजनों की गरिमामय उपस्थिति रही।

## सुनाम (पंजाब)

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कमार जी, मुनि अमन कमार जी, मुनि नमि कुमार जी ने प्रातः तेरापंथ सभा के अध्यक्ष रामस्वरूप के निवास स्थान से विहार कर अणुव्रत भवन में चातुर्मास के लिए प्रवेश किया। मुनिश्री मंत्र जाप करने के पश्चात कार्यक्रम स्थल बाबा चिरंगीशाह हाल पधारे। वहाँ विशाल जनसमुह को संबोधित करते हुए कहा कि चतुर्मास काल में अधिक से अधिक धर्माराधना हो, ज्ञान-दर्शन, चारित्र तप की आराधना हो। जिससे कर्म निर्जरा के साथ धर्मसंघ की प्रभावना हो सके।

मुनिश्री ने कहा कि आज मुझे प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि गुरुदेव की असीम कृपा और मौसम की अनुकूलता के कारण हम समय पर चतुर्मास के लिए पहुँच गए।

इस अवसर पर संस्था शिरोमणी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया भी अपने सहयोगी कुलदीप सुराणा और मनोज गोलछा के साथ सामायिक पूर्वक लाभ ले रहे हैं। इस अवसर पर मुनि नमि कुमार जी ने अपना वक्तव्य देते हुए नौ दिन की तपस्याका प्रत्याख्यान किया।

कार्यक्रम में मनसुख सेठिया, कुलदीप सुराणा, केवल गोयल, मक्खनलाल गोयल, रामस्वरूप जैन, देसराज जैन, अशोक जैन, बलदेव जैन, प्रवीण गोयल, विनोद कालड़ा, डॉ० योगेश जैन, रमेश जैन, प्रबोध जैन, विजय गोयल, अरिहंत गोयल, राम गोयल ने अपने विचार व्यक्त किए। शासनश्री साध्वी सोमलता जी के विचारों को अरिहंत गोयल ने प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम में लुधियाना, अहमदगढ़, नामा लहरा, चंडीगढ़, बरेटा, बुढ़लाढ़ा, मानसा, भीखी, भटिंडा, पातड़ा, समाणा, बरनाला, धनौला, बड़बड़, भवानीगढ़, लोंगोवाल, यमुनानगर, सिरसा, पंचकूला आदि के भाई-बहन उपस्थित हुए।

# संस्कार निर्माण शिविर

**बरेटा मंडी, पंजाब।**

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी के सान्निध्य में बरेटा तेरापंथ भवन में शिविर का उद्घाटन किया गया। शिविरार्थी बच्चों की आवास, भोजन एवं प्रशिक्षण का सारा कार्यक्रम ग्रीनलैंड स्कूल में रखा गया। स्कूल के चेयरमैन मंगलराय बंसल, मंजु देवी बंसल ने शिविरार्थियों की सारी व्यवस्थाओं का दायित्व और मनोयोग से संपादित किया।

शिविर में आसन, प्राणायाम, ध्यान के साथ-साथ कंठस्थ ज्ञान और तत्त्वज्ञान का सुंदर क्रम रहा। बच्चों का उत्साह सभी के लिए संतोषजनक रहा।

शिविर में जगदीश जैन, प्रवीण जैन, राजन जैन, अमित जैन, पुनीत जैन, हर्षित जैन, गंगा जैन, धवल जैन सहित पवन नवलखा एवं पंजाब, हरियाणा से पधारे अभातेयुप के पदाधिकारियों की अहम भूमका रही।

पंजाब प्रांतीय सभा के अध्यक्ष केवल गोयल ने समय-समय पर शिविरार्थियों को संभाला। अरिहंत गोयल, गौरव जैन का भी सहयोग रहा। समापन समारोह में पंजाब प्रांतीय सभा के चेयरमैन सुरेंद्र मित्तल, अध्यक्ष केवल गोयल, एक्स एमएलए मंगलराय बंसल, सुनील खुल्लर, विनोद देवी सुराणा, अरिहंत गोयल आदि ने मुनिश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की।

कार्यक्रम का संयोजन प्रवीण जैन ने किया। पंच दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर के श्रेष्ठ शिविरार्थी बनने का गौरव हेमंत जैन को मिला। नमन जैन ने विशिष्ट शिविरार्थी का सम्मान प्राप्त किया। कार्तिकेय को तृतीय स्थान के साथ पुरस्कृत किया गया।

✦ *अच्छा कार्यकर्ता वही हो सकता है जो अनुशासनप्रिय होता है और स्वयं पर होने वाले अनुशासन को सहन कर सकता है।*

— आचार्यश्री महाश्रमण

# मुनिवृंद का आध्यात्मिक मिलन

**बगोमुंडा।**

तेरापंथी सभा, बगोमुंडा के तत्त्वावधान में तेरापंथ भवन में मुनि रमेश कुमार जी, मुनि प्रशांत कुमार जी चारों संतों का आध्यात्मिक मिलन समारोह आयोजित हुआ। इस अवसर पर पश्चिम उड़ीसा के अनेक क्षेत्रों के सैकड़ों भाई-बहनों ने भाग लिया। इससे पूर्व चार छक्क रोड़ के चौराहे पर मुनि रमेश कुमार जी और मुनि प्रशांत कुमार जी का आध्यात्मिक मिलन हुआ।

तेरापंथ भवन में आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि रमेश कुमार जी ने कहा कि संतों का मिलन सुखदाई और कल्याणकारी होता है। संत स्वपर कल्याण के मार्ग पर चलते हैं। हिंदुस्तान की धरती संत एवं धर्म की भूमि है। संत और धर्म के लोगों का विशेष आकर्षण है। संत के पास जाए तो माया एवं अभिमान की गठरी लेकर न जाएँ। माया और अभिमान को बाहर छोड़कर जाने से परमात्मा की प्राप्ति होती है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि मुनि प्रशांत कुमार जी हमारे धर्मसंघ के विद्वान, सरलमना, प्रवचनकार संत हैं। जैसा नाम वैसा स्वभाव है। मुनि कुमुद कुमार जी में लोगों को जोड़ने की कला बहुत अच्छी है। परिश्रमी हैं। मुनि प्रशांत कुमार जी ने कहा कि आज हमें बहुत प्रसन्नता हो रही है, आज हमारे पुराने साथी संत मिले हैं। अच्छे परिश्रमी संत हैं। अच्छे अनुभव प्राप्त करते हुए अपने जीवन की गरिमा बढ़ा रहे हैं। मुनि कुमुद कुमार जी ने कहा कि मुनि रमेश कुमार जी हमारे धर्मसंघ के विद्वान साधनाशील संत हैं। अपनी व्यवहार कुशलता से धर्मसंघ की उल्लेखनीय प्रभावना कर रहे हैं। स्वास्थ्य की अनुकूलता न होने के उपरांत भी लंबी यात्रा कर गुरुइंगित की पालना की। आज आपसे बहुत कुछ सीखने को मिलेगा। आपका टिटलागढ़ चातुर्मास ऐतिहासिक होगा। मुनि रत्न कुमार जी दीक्षा से बाल उम्र से युवा एवं अपने कार्य व्यवहार एवं अनुभव से प्रौढ़ हैं। आप रत्न की तरह चमकते रहें।

मुनि रत्नकुमार जी ने कहा कि संतों का आपसी मिलन देखा। किस प्रकार संत आत्मीय सौहार्द से मिल रहे थे। जो हृदय में सेंटर में होता है, उसका अपना महत्त्व होता है। पश्चिम उड़ीसा के श्रावक समाज दोनों चातुर्मास का लाभ उठाएँ।

इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि रमेश कुमार जी के महामंत्रोच्चार से हुआ। तेरापंथ महिला मंडल बगोमुंडा ने मंगलाचरण किया। सभाध्यक्ष अशोक जैन, कांटाबांजी सभामंत्री सुमित जैन, ओडिशा प्रांतीय तेरापंथ सभा अध्यक्ष मुकेश जैन, बगोमुंडा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, टिटलागढ़ से पदमसेन जैन आदि अनेक वक्ताओं ने गीत एवं वक्तव्य द्वारा अपने विचारों की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार महासभा प्रभारी केवलनारायण जैन ने किया।

# संतों का आध्यात्मिक मिलन

**जाखल मंडी।**

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी एवं मुनि जम्बू कुमार जी का आध्यात्मिक मिलन का कार्यक्रम जाखल मंडी में हर्षोल्लास से हुआ। पूर्व विराजित मुनि कमल कुमार जी ने मुनि जम्बूजी एवं मुनि धवलजी की अगवानी की। कार्यक्रम में जाखल, बरेटा, सुनाम आदि क्षेत्र के लोगों ने खूब उत्साह से अपनी सहभागिता दर्ज कराई।

मुनि धवल कुमार जी, मुनि अमन कुमार जी, मुनि नमि कुमार जी ने अपने विचार प्रेषित किए। मुनि जम्बू कुमार जी ने कहा कि मुनि कमल कुमार जी महत्ती कृपा करके जाखल मंडी पधारे और दर्शन दिलवाए। उन्होंने आगे कहा कि मुनि कमल कुमार जी ४४ साल से एकांतर तप, उग्र विहार, दिन में तीन बार व्याख्यान, धर्मसंघ की महान प्रभावना कर रहे हैं। ऐसे तपस्वी मुनिप्रवर के दर्शन करके उन्हें परम प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि इतिहास के जानकार, कुशल साहित्यकार, प्रभावक वक्ता मुनि जम्बू कुमार जी के दर्शन करके उन्हें परम हर्ष हो रहा हैं मुनिश्री ने संतों का स्वागत सुंदर कविता द्वारा किया। कार्यक्रम में जाखल के अशोक जैन एवं पंजाब प्रांतीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष केवल जैन ने अपने विचार व्यक्त किए।

# अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

**जयपुर।**

अणुव्रत समिति, जयपुर द्वारा मानव सेवा संघ प्रेम निकेतन आश्रम तथा प्रेक्षा फाउंडेशन के साथ मिलकर अंतर्राष्ट्रीय योगा दिवस प्रेम निकेतन आश्रम में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मानव सेवा संघ की प्रार्थना से किया गया। तत्पश्चात प्रेक्षा गीत की प्रस्तुति रीना गोयल एवं समुह द्वारा दी गई।

मानव सेवा संघ की सचिव मीना गर्ग ने प्रेम निकेतन आश्रम की क्रियाविधियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। अणुव्रत समिति अध्यक्ष विमल गोलछा ने कहा कि बाल्यकाल से ही बच्चों में योग, प्राणायाम का अभ्यास करवाया जाना चाहिए। मानव सेवा संघ आश्रम के अध्यक्ष शेखर गर्ग ने सभी का आभार व्यक्त किया। आशा नीलू टांक के सहयोग से यह कार्यक्रम सफल हुआ। कार्यक्रम का संयोजन नीलू टांक द्वारा किया गया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति मंत्री डॉ० जयश्री सिद्धा तथा अणुव्रत समिति सदस्य, प्रेक्षा फाउंडेशन के विभिन्न शिक्षक सुनिता एवं विद्यार्थी तथा मानव सेवा संघ के विभिन्न सदस्य उपस्थित थे।

# अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के विविध आयोजन

## गुवाहाटी

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में अणुव्रत समिति एवं मारवाड़ी युवा मंच, कामाख्या शाखा के संयुक्त तत्त्वावधान में सामुहिक योग शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बजरंग लाल डोसी व मायुमं कामाख्या शाखा की अध्यक्ष प्रेमलता सिंघानिया ने सभी का स्वागत करते हुए योग दिवस की शुभकामनाएँ दी। तत्पश्चात विवेकानंद योग प्रशिक्षण केंद्र, कन्या कुमारी से प्रशिक्षित योग गुरु ताराचंद ठोल्या तथा प्राणायाम व प्रेक्षाध्यान विशेषज्ञ अजय कुमार भंसाली ने योगाभ्यास, आसन प्राणायाम तथा प्रेक्षाध्यान एवं यौगिक क्रियाएँ करवाई।

कार्यक्रम की शुरुआत अणुव्रत गीत के संगान से हुई। अणुव्रत समिति अध्यक्ष बजरंग लाल डोसी ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया। इस अवसर पर अणुविभा के सहमंत्री छतर सिंह चोरड़िया, अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष नवरतनमल गधैया, मंत्री पवन जम्मड़, सहमंत्री अशोक बोरड़ व जयकुमार भंसाली, कोषाध्यक्ष संजय चोरड़िया, पूर्व अध्यक्ष निर्मल सामसुखा सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यों की उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन समिति के मंत्री पवन जम्मड़ ने किया। धन्यवाद ज्ञापन मायुमं कामाख्या शाखा की मंत्री इंदु पारीक ने किया।

## कांकरोली

शासनश्री मुनि रविंद्र कुमार जी एवं मुनि अतुल कुमार जी के सान्निध्य में महावीर मंच एवं तेयुप के तत्त्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस प्रज्ञा विहार कांकरोली में आयोजित किया गया।

मुनि अतुल कुमार जी ने कहा कि योग उतना ही प्राचीन है जितना मनुष्य। योग के द्वारा लोग अपने आपको निरोग रख सकते हैं। योग का मतलब है जोड़ना, खुद में ऊर्जा को समाहित करना, शरीर, मन और आत्मा को मजबूत और खूबसूरत बनाना। रोगमुक्त जीवन जीने की चाहत हो तो नियमित योग करने की आदत डालिए।

मुनिश्री ने कहा कि योग एक अनुशासन है, यह चित्त और वृत्तियों का निरोध है। योग ना सिर्फ मनुष्य के मस्तिष्क और शरीर की एकता को संगठित करता है, बल्कि यह मनुष्य के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का काम करता है।

स्वागत उद्‌बोधन महावीर मंच अध्यक्ष सुशील बड़ाला ने दिया। योग मुद्रा प्रशिक्षिका कुसुम बाफना ने योग प्राणायाम के प्रयोग करवाए। स्वागत सम्मान अनिल बम्बोरी, प्रकाश सोनी, तेरापंथी सभा अध्यक्ष देवीलाल हिंगड़, अध्यक्ष स्थानकवासी समाज भरत शर्मा एवं नंदकुमार शर्मा (योग मुद्रा फाउंडेशन डायरेक्टर) का किया गया।

इंद्रा पगारिया तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा, निखिल कच्छारा तेयुप अध्यक्ष को सम्मान पत्र एवं उपरना भेंट किया गया। योग शिविर में काफी संख्या में साधक-साधिकाएँ उपस्थित थे।

## जीन्द

तेरापंथ भवन में तेरापंथ प्रेक्षावाहिनी के द्वारा योग दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ सामुहिक प्रेक्षा गीत से हुआ। डॉ० सुरेश जैन ने 'करो योग बने निरोग' विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला।

डॉ० सुरेश जैन ने आसन व प्राणायाम के प्रयोग भी करवाए। मास्टर नारायण सिंह रोहिल्ला द्वारा प्रेक्षाध्यान का प्रयोग भी करवाया गया। इस अवसर पर जीन्द प्रेक्षावाहिनी के संवाहक कुणाल मित्तल, उपासिका कांता मित्तल, सुशीला जैन, संतोष जैन, विमल जैन, प्रोफेसर भीम सिंह चहल आदि ने ध्यान व योग का अभ्यास किया।

## चंडीगढ़

योग भारत की प्राचीन परंपरा का एक अमूल्य उपहार है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के माध्यम से भारत ने समस्त विश्व को एक सूत्र में बाँधने का काम किया है। आइए योग को अपने जीवनशैली में शामिल करें और जीवन को ऊर्जा से परिपूर्ण बनाएँ। ये शब्द मनीषी मुनि विनय कुमार जी 'आलोक' ने अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर अणुव्रत भवन, तुलसी सभागार में कहे। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने योग, मेडिटेशन किया।

शासनश्री मुनि विमल कुमार जी ने कहा कि योग हमारे शरीर में शांति बढ़ाने और हमारे सभी तनाव तथा समस्याओं से मुक्ति दिलाने का कार्य करता है।

जामा मस्जिद के ईमाम मौलाना अजमल खां ने कहा कि योग में हमें चिंतामुक्त और तनावमुक्त रहने के लिए साधन और तकनीक मिलते हैं।

मुनि स्वस्तिक कुमार जी ने कहा कि योग शब्द की उत्पत्ति संस्कृति के युज से हुई है, जिसका मतलब होता है आत्मा का सार्वभौमिक चेतना से मिलना। योग लगभग दस हजार साल से भी अधिक समय से अपनाया जा रहा है।

भाजपा प्रवक्ता व व्यापार मंडल के अध्यक्ष कैलाश जैन ने कहा कि योग का एक महत्त्वपूर्ण लाभ यह है कि यह व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाता है। योग हमारी तरंगों को बेहतर बनाता है।

मुनि अभय कुमार जी सहित मुनि मधुर कुमार जी, मुनि अक्षय कुमार जी, मुनि धन्य कुमार जी, मुनि अर्जव कुमार जी, मुनि सुपारस कुमार जी ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। मुनि अक्षय कुमार जी, मुनि सुपारस कुमार जी के प्रेक्षा गीत से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ।

## कांदिवली, मुंबई

प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्त्वावधान में प्रेक्षाध्यान योग साधना केंद्र द्वारा श्री कृष्णांगली आकुर्ली माता मंदिर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। इसमें अच्छी संख्या में भाई-बहनों ने भाग लिया। तेरापंथ सभा, महिला मंडल, कांदिवली, बोरिवली के पदाधिकारियों ने भाग लिया।

वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दुगड़ ने त्रिपदी वंदना से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। गायक रवि मालू ने आत्म साक्षात्कार प्रेक्षाध्यान की स्वर लहरियों के साथ कार्यक्रम आगे बढ़ाया। वरिष्ठ परीक्षा प्रशिक्षक दुगड़ ने आसन खड़े होकर, बैठकर, लेटकर व सूक्ष्म यौगिक क्रियाएँ करवाई।

प्रेक्षा प्रशिक्षिका विमला देवी दुगड़ ने प्राणायाम दीर्घ श्वास प्रेक्षा एवं संकल्प करवाए। मंगलभावना के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ।

## हैदराबाद

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर अणुव्रत समिति, हैदराबाद व गांधी ज्ञान मंदिर कोठी के संयुक्त तत्त्वावधान में आसन प्राणायाम व योग के कार्यक्रम का आयोजन निःशुल्क प्रभात हाई स्कूल खैरताबाद में गांधी ज्ञान मंदिर के योग रत्न महेश प्रसाद दुबे व श्याम सुंदर अग्रवाल के नेतृत्व में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर अणुव्रत समिति, हैदराबाद के अध्यक्ष व स्कूल के मानद मंत्री प्रकाश एच० भंडारी व स्कूल के अध्यक्ष श्रवण कुमार नरेडी के साथ अन्य पदाधिकारी उपस्थित थे। इस अवसर पर विद्यार्थियों को योग, आसन, प्राणायाम आदि के विभिन्न प्रयोग कराए गए।

## ठाणे, मुंबई

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशन में तेरापंथी सभा, तेयुप, तेममं, अणुव्रत ठाणे क्षेत्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में ठाणे मजीवाड़ा, तेरापंथ भवन व वेद विद्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम को और भी बेहतरीन बनाने के लिए योग ट्रेनर सुरभि पाठक को आमंत्रित किया। उनका साहित्य से सम्मान किया गया। प्रेक्षा प्रशिक्षिका सीमा सांखला, प्रिया श्रीश्रीमाल, कांता श्रीश्रीमाल, सुनीता बाफना, ममता श्रीश्रीमाल ने प्रयोग करवाए।

ठाणे सभा अध्यक्ष रमेश सोनी, मनोहर कच्छारा, राजेश बाफना, प्रमोद धींग, मुकेश डांगी, आनंद भंसाली, सुभाष हिंगड़, भंवरदास जैन, ठाणे सिटी अध्यक्ष अनिल धारीवाल, मंत्री जयंती भंसाली व स्कूल प्रिंसिपल, टीचर्स व पूरी टीम की सराहनीय उपस्थिति रही।

## अहमदाबाद

प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्त्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर तेरापंथ सेवा समाज, प्रेक्षावाहिनी, तेयुप एवं तेमम के संयुक्त उपक्रम से तेरापंथ भवन, शाहीबाग पर योग शिविर का आयोजन किया गया। मंगलाचरण प्रेक्षागीत से तेरापंथ महिला मंडल की बहनों द्वारा किया गया। त्रिपदी वंदना विमल बाफना ने करवाई।

स्वागत भाषण तेरापंथ सेवा समाज प्रधान ट्रस्टी सजनराज संघवी ने करते हुए योग जीवन का अंग बनाकर नियमित करने पर बल दिया। योगक्रिया व आसन के प्रयोग प्रेक्षा प्रशिक्षक धर्मेन्द्र कोठारी ने करवाए। प्राणायाम प्रेक्षा प्रशिक्षक जवेरीलाल संकलेचा ने करवाए।

शासनश्री साध्वी सरस्वतीजी के सहवर्तीनी साध्वी नंदिताश्री जी ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा चांदबाई छाजेड़ ने प्रेक्षाध्यान का महत्त्व बताया।

तेयुप मंत्री दिलीप भंसाली ने यौगिक क्रिया पर प्रकाशडाला। मंगलभावना प्रेक्षा प्रशिक्षक हेमलता परमार ने एवं संकल्प सूत्र तेयुप संयोजक विजय छाजेड़ एवं विशाल पींचा ने करवाया।

संयोजन संयोजक जवेरीलाल संकलेचा ने एवं आभार ज्ञापन मंत्री अरुण बैद ने किया। विशेष सहयोग तेरापंथ सेवा समाज अध्यक्ष नानालाल कोठारी एवं ट्रस्टी मंत्री दिनेश बालड़ का रहा। विशेष उपस्थिति तेयुप अध्यक्ष अरविंद संकलेचा व अणुव्रत समिति अध्यक्ष सुरेश बागरेचा की रही।

# ज्ञानशाला कार्यक्रम : रोल मॉडल बने पेरेंट्स

**पल्लावरम।**

तेरापंथ भवन में साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी के सान्निध्य में 'ज्ञानशाला मॉल' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में पल्लावरम के ज्ञानार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीवृंद के संस्कार गीत से हुआ। ज्ञानार्थियों द्वारा ज्ञानशाला मॉल की प्रस्तुति दी। एक भावपूर्ण नाटिका के द्वारा उन्होंने अपेक्षित संस्कारों की विविध संस्कारों की आइटम्स लेकर आए और आह्वान किया कि सभी जन उनके बच्चों के लिए ये प्रोडक्ट्स खरीदें।

ज्ञानशाला के विद्यार्थी एवं उनके अभिभावकों को दिशा दर्शन देते हुए कहा कि बच्चों के प्रथम रोल मॉडल उनके माता-पिता होने चाहिए। आप बच्चों पर समय इन्वेस्ट करें, संवाद करें, संस्कारों की सौगात दें, जीवन मूल्यों का संवर्धन करें। आपकी अजागरूकता बच्चों के भविष्य पर बुरा प्रभाव डाल सकती है।

ज्ञानार्थियों को आजीवन नशामुक्त रहने के लिए संकल्पित रहना है। संघ और संघपति के प्रति दृढ़ आस्था रखकर महानता की मंजिल हासिल करना है। कार्यक्रम का संचालन ज्ञानशाला प्रशिक्षिका सुधा मरलेचा ने किया।

# संगठन समाचार

## जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा

### दिल्ली

| | | |
|---|---|---|
| अध्यक्ष | : | श्री सुखराज सेठिया |
| निवर्तमान अध्यक्ष | : | श्री जोधराज बैद |
| उपाध्यक्ष | : | श्री नत्थूराम जैन |
| उपाध्यक्ष | : | श्री बाबूलाल दुगड़ |
| उपाध्यक्ष | : | श्री बिमल बैंगानी |
| उपाध्यक्ष | : | श्री लक्ष्मीपत बोथरा |
| उपाध्यक्ष | : | श्री सुभाषचंद्र सेठिया |
| उपाध्यक्ष | : | श्री प्रदीप संचेती |
| महामंत्री | : | श्री प्रमोद घोड़ावत |
| मंत्री | : | श्री दीपक जैन |
| मंत्री | : | श्री अनिल पटवा |
| मंत्री | : | डॉ० कुसुम लुणिया |
| मंत्री | : | श्री संजीव जैन |
| मंत्री | : | श्री अरविंद दुगड़ |
| मंत्री | : | श्री गजेंद्र दुधेड़िया |
| कोषाध्यक्ष | : | सुनील भंसाली |
| संगठन मंत्री | : | श्री अशोक संचेती |

✦ व्यक्तियों के समूह से आज का निर्माण होता है, इसलिए समाज व्यक्ति से बड़ा होता है। एक व्यक्ति के चिंतन की तुलना में समाज अथवा संगठन का चिंतन महत्त्वपूर्ण होता है।
—आचार्यश्री महाश्रमण

# तेयुप के विविध कार्यक्रमों के आयोजन

## फिट युवा-हिट युवा

**साउथ कोलकाता।**

अभातेयुप के तत्त्वावधान में तेयुप, साउथ कोलकाता ने फिट युवा-हिट युवा के अंतर्गत तेरापंथी सभा, तेममं, टीपीएफ, प्रेक्षा फाउंडेशन और रियल योगा (सिंगापुर) के संयुक्त प्रयास से अंतर्राष्ट्रीय योगा दिवस को दो सत्रों में मनाया गया। नवकार महामंत्र के संगान से कार्यक्रम की शुरुआत हुई परिषद के अध्यक्ष रोहित दुगड़ ने अध्यक्षीय वक्तव्य में सभी का स्वागत किया।

प्रथम सत्र में विशेष रूप से रियल योगा (सिंगापुर) के कौशिक बेरा, राहुल माईती और सूरज ने प्रतिदिन आवश्यक योगासनों के बारे में बताया।

योगासन के अभ्यास के पश्चात, दूसरे सत्र में, प्रेक्षा फाउंडेशन की पूर्वी जोन के प्रेक्षा प्रशिक्षकों की संयोजिका मंजु सिपानी ने प्रेक्षाध्यान करवाया।

दोनों सत्रों में आकर्षण का एक बिंदु अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस था। इस कार्यक्रम में फेसबुक लाइव द्वारा दोनों सत्र में प्रतिभागियों ने भी अच्छी संख्या में भाग लिया।

कार्यक्रम में ७० सहभागियों सहित साउथ कोलकाता तेरापंथी सभा के सहमंत्री-द्वितीय एवं एमबीडीडी के अंतर्राष्ट्रीय संयोजक यशवंत रामपुरिया, टीपीएफ, साउथ कोलकाता के अध्यक्ष आलोक चोपड़ा, मंत्री प्रवीण सिरोहिया, तेममं की मंत्री बबीता भुतोड़िया की उपस्थिति रही। कार्यकारिणी, कार्यसमिति एवं साधारण सदस्यों की अच्छी सहभागिता रही।

कार्यक्रम के अंत में परिषद के मंत्री मोहित दुगड़ ने सभी का आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम संयोजक अनिल सिंघी और सौरभ श्यामसुखा को कार्यक्रम के सफल आयोजन हेतु धन्यवाद ज्ञापन किया।

## योग दिवस : फिट युवा हिट युवा

**सूरत।**

अभातेयुप द्वारा निर्देशित 'फिट युवा हिट युवा' के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप द्वारा प्रेक्षा प्रशिक्षकों के सहयोग से योग दिवस का आयोजन तेरापंथी भवन, सिटी लाइट में किया गया। सर्वप्रथम नवकार मंत्र के साथ कार्यक्रम का प्रारंभ किया गया। प्रेक्षा प्रशिक्षकों द्वारा मंगलाचरण का संगान कर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। मुख्य प्रशिक्षक गौतम गादिया ने योगासन करवाए तथा उनके लाभ सदन को बताए। श्वेता रामपुरिया ने योग आसन के साथ प्राणायाम का महत्त्व समझाया।

रेणु बैद ने कायोत्सर्ग के प्रयोग तथा माया दारूवाला ने लाफिंग योगा के प्रयोग करवाए।

इस अवसर पर पूर्व मुख्य ट्रस्टी बालचंद बेताला, सभा अध्यक्ष नरपत कोचर, कोषाध्यक्ष प्रदीप बैद, अणुव्रत समिति ग्रेटर सूरत अध्यक्ष विजयकांत खटेड़, महिला मंडल अध्यक्षा राखी बैद, मंत्री सीमा भोगर, प्रेक्षा प्रशिक्षक, पदाधिकारी एवं कार्यकारिणी सदस्यों की अच्छी उपस्थिति रही।

## सेवा कार्य

**जोरावरपुरा।**

तेयुप द्वारा आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०२वाँ जन्म दिवस पर अपना घर आश्रम मे बेसहारा, अनाथ २८७ प्रभुजी को भोजन खिलाकर और उनकी सेवा करके मनाया गया। तेयुप अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार बुच्चा, मंत्री राजेश छाजेड़, सुनील मरोठी, मनीष बुच्चा, कमल बुच्चा, मनोज बुच्चा, नीलेश बुच्चा सहित अनेक अन्य सदस्यों द्वारा बड़े उत्साह के साथ प्रभंजनों को खाना खिलाया और सेवा के तत्पश्चात अपना घर आश्रम के सेवादारों द्वारा विभिन्न जानकारी दी गई। नवनिर्मित भवन का अवलोकन करवाया। तेयुप द्वारा रात्रिकालीन में भजन संध्या का भी कार्यक्रम रखा गया।

## नि:शुल्क शुगर एवं हिमोग्लोबिन चेकअप कैंप का शुभारंभ

**उधना।**

तेयुप द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर–सचीन पर पैथोलॉजी विभाग की सेवा का लाभ जन-जन तक पहुँचे, उस उद्देश्य से संपूर्ण जुलाई माह में प्रति मंगलवार नि:शुल्क शुगर एवं हिमोग्लोबिन चेकअप कैंप का शुभारंभ किया गया।

चेकअप शिविर में तेयुप, उधना के एटीडीसी सचीन प्रभारी राकेश पितलिया ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

इस कैंप के आयोजन में सहमंत्री रौनक श्रीश्रीमाल, एटीडीसी प्रभारी ललित चंडालिया, एटीडीसी सचीन प्रभारी राकेश पितलिया, एटीडीसी, उधना प्रभारी वैभव ढीलीवाल ने विशिष्ट श्रम एवं समय नियोजन कर संपादित किया।

इस कैंप के प्रचार-प्रसार में स्थानीय श्रावक समाज, तेयुप, सचीन का पूर्ण सहयोग मिला एवं प्रचार-प्रसार प्रभारी रवि बोथरा का विशेष श्रम रहा।

## आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी का १०३वाँ जन्म दिवस समारोह

**रासीसर**

साध्वी सूरजप्रभा जी के सान्निध्य में रासीसर गाँव में तेयुप, जोरावरपुरा द्वारा धम्म जागरण का आयोजन रखा गया। साध्वी लावण्ययशा जी ने कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी अहिंसा, शांति, विश्व मैत्री के पुजारी थे। उन्होंने प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान आदि अनेक बातों पर बल दिया। साध्वी सूरजप्रभाजी ने गीतिका के माध्यम से महाप्रज्ञ जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

भजनों की प्रस्तुति में बाबूलाल बुच्चा, सुरेंद्र बुच्चा, वीरेंद्र बुच्चा, नीलेश बुच्चा, राजेश छाजेड़, जीवराज मरोठी, महेंद्र सुराणा, सुरेंद्र सुराणा, सुनील सुराणा, सुरेंद्र छाजेड़, सुनील मरोठी, झंवरलाल लालवानी, महिला मंडल की मोनिका बुच्चा, सोनू बोथरा आदि ने अपने स्वरों की प्रस्तुति दी।

## हमारा जीवन तप की ज्योति...

(पृष्ठ ११ का शेष)

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने कहा कि जैन दर्शन में द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव को महत्त्व दिया जाता है। किसी चीज की व्याख्या करने के लिए हम अनेक कोणों से सोचते हैं। चाड़वास एक पुण्यवान क्षेत्र है। गुरु कितना ध्यान रखते हैं।

पूज्यप्रवर की अभिवंदना में साध्वी विवेकश्री जी, साध्वी मनीषाश्री जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। स्वागत की कड़ी में स्थानीय सभाध्यक्ष गजराज भंडारी, महिला मंडल, सुरेंद्र चोरड़िया, पन्नालाल बैद, प्रेम बच्छावत, कमल भंडारी, विनोद बच्छावत ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर ने फरमाया कि यथासंभवतया भविष्य में कभी चाड़वास में अक्षय तृतीया समारोह करने का भाव है, साथ-साथ ११ दिन का प्रवास भी उस समय करने का भाव है तथा वैशाख शुक्ला नवमी, दशमी एवं चतुर्दशी के कार्यक्रम भी उस प्रवास में यथासंभव चाड़वास में करने का भाव है।

अभिवंदना की कड़ी में विनोद लुणिया, स्थानीय सरपंच गोदारा, रतनगढ़ विधायक अभिनेष महर्षि, मनोज लुणिया, रौनक लुणिया, चोरड़िया परिवार बहनें राजश्री दुगड़, मोनिका चोरड़िया, अशोक दुगड़ आदि ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

# रक्तदान शिविर का आयोजन

**बेहाला।**

तेयुप, बेहाला एवं बीएपीएस स्वामीनारायण मंदिर, जोका के संयुक्त तत्त्वावधान में बीएपीएस स्वामीनारायण मंदिर में आचार्यश्री तुलसी के २६वें महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में तेयुप, बेहाला का एकादशम रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।

नमस्कार महामंत्र के सामुहिक उच्चारण के साथ ही शिविर की शुरुआत हुई। पूर्व अध्यक्ष मोहित धारीवाल ने शिविर का कार्यभार संभाला। राकेश भूतोड़िया, आदर्श कठोतिया, सुनील भंसाली, नवीन बैद, रतन सेठिया, राहुल मणोत, सिद्धार्थ धारीवाल, श्रेयांस सुराणा आदि ने रक्तदान शिविर को सफलतापूर्वक संचालित किया। बेहाला सभा के कोषाध्यक्ष संदीप जैन ने अपनी विशेष उपस्थिति दर्ज कराई।

कुल २४८ यूनिट रक्त संग्रह हुआ। ब्लड बैंक सरोज गुप्ता कैंसर रिसर्च हॉस्पिटल थे। स्वामीरामनारायण मंदिर के स्वामी अमरूतचरित जी ने भी रक्तदान किया एवं सभी का उत्साह बढ़ाया।

# दिव्य बोध युवा संस्कार कार्यशाला

**भुज।**

मुनि पुलकित कुमार जी के सान्निध्य में सकल जैन समाज के युवाओं को आह्वान करते हुए 'दिव्य बोध युवा संस्कार कार्यशाला' तेयुप एवं महिला मंडल, भुज के तत्त्वावधान में में आयोजित हुआ।

मुनि पुलकित कुमार जी ने कहा कि युवा शक्ति किसी भी देश, समाज एवं परिवार का आधार स्तंभ होती है। युवाओं में जोश के साथ होश भी बढ़े इसलिए ऐसी कार्यशालाओं का आयोजन महत्त्वपूर्ण बन जाता है। मुनिश्री ने 'लाईफ मैनेजमेंट के आध्यात्मिक सूत्र' विषय पर उद्‌बोधन देते हुए कहा कि जीवन में आध्यात्मिक सूत्रों का विशेष महत्त्व होता है। अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह सिद्धांतों को अपनाकर दैनिक जीवन की अनेक समस्याओं को दूर किया जा सकता है।

इस अवसर पर मुनि आदित्य कुमार जी ने परिवार में बच्चों के भीतर छिपे टैलेंट को कैसे खोजा जाए तथा संतों की आध्यात्मिक शक्ति से कैसे कनेक्ट बनें रहा जा सकता है, इस पर वक्तव्य दिया।

मुनिश्री द्वारा महामंत्रोच्चार से कार्यशाला का प्रारंभ हुआ। तेयुप सदस्यों द्वारा विजय गीत हुआ। महिला मंडल की तरफ से भारतीबेन शाह तथा तेयुप की तरफ से अध्यक्ष आशीषभाई बाबरिया ने वक्तव्य दिया। कार्यक्रम का संचालन तेयुप संगठन मंत्री आदर्श संघवी ने किया। कार्यशाला में भुज समस्त जैन समाज के युवाओं ने अच्छी संख्या में भाग लिया।

# अणुव्रत बुक बैंक प्रोजेक्ट

**मुंबई।**

अणुव्रत समिति, मुंबई के अंतर्गत अणुव्रत बुक बैंक प्रोजेक्ट में उपसमिति रायगढ़ द्वारा स्लम एरिया मेकं गरीब विद्यार्थियों को नोटबुक्स, स्कूल बैग आदि विद्यार्थियों को वितरित किए।

इस क्षेत्र में कॉलेज के विद्यार्थी अपना अमूल्य समय निकालकर स्लम एरिया में गरीब विद्यार्थियों को पढ़ाते हैं।

इस कार्यक्रम में उपसमिति रायगढ़ से राजेश मेहता, जयेश सामर, सीमा बाबेल, प्रमोद डांगी एवं कॉलेज के विद्यार्थी और रॉबिनहुड आर्मी टीम दिव्यांशु घुंडियाल, झलक डेडिया, अनिकेत गोदविंदे सहित अनेक सदस्यों की उपस्थिति रही।

# चित्रांकन प्रतियोगिता का आयोजन

**बंगाईगाँव।**

अणुव्रत समिति, बंगाईगाँव ने नेताजी स्कूल, बी०जी० कॉलोनी में जाकर चित्रांकन प्रतियोगिता करवाई। इस स्कूल के बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, प्रतियोगिता को दो ग्रुप में बाँटा गया। समिति के सदस्य धीरज शर्मा ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्रम किया। स्कूल के प्रधानाचार्य दुर्गा प्रसाद और अध्यक्ष अंसारी सर तथा बाकी सभी अध्यापकों का भी सहयोग रहा।

समिति के सभी सदस्यों का कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान रहा।

# मानव विकृति से प्रकृति में आने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

**रणधीसर, ७ जुलाई, २०२२**

नशामुक्ति के प्रबल प्रेरक युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी पड़िहारा से ६ किलोमीटर का विहार कर रणधीसर गाँव स्थित भवानी सिंह राजपुरोहित के निवास स्थान पर पधारे। गौरतलब है कि रणधीसर में एक भी तेरापंथी परिवार नहीं हैं, परंतु गाँव में मानवता के मसीहा का राजशाही स्वागत किया गया। मुख्य प्रवचन में समता के सागर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में व्यवहार चलता है। एक-दूसरे से बातचीत, लेन-देन आदि कार्य होते हैं। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य का सहयोग भी करता है।

तत्त्वार्थ सूत्र में कहा गया है—परस्परोपग्रहो जीवानाम्। जैन दर्शन में छः द्रव्य बताए गए हैं। धर्मास्तिकाय जीव और पुद्‌गल के चलने में अधर्मास्तिकाय उनके ठहरने में, आकाशास्तिकाय, स्थान देने में, पुद्‌गलास्तिकाय जीव के उपयोग में आते हैं। काल समय का सूचक है। छठा द्रव्य जीवास्तिकाय है, वो परस्पर आपस में जीव-जीव का सहयोग करते हैं। सहयोग से एक-दूसरे का काम चलता है।

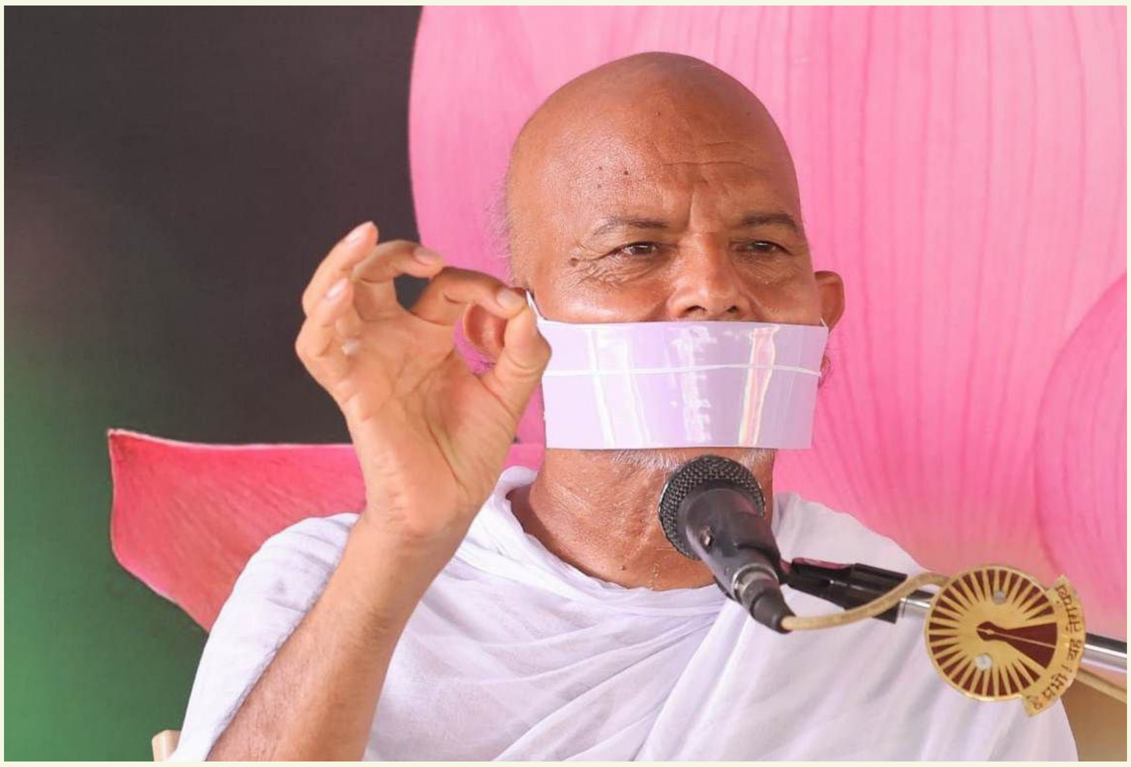

आध्यात्मिक, धार्मिक सहयोग करना तो कल्याणकारी बन जाता है। गृहस्थ अलग-अलग क्षेत्रों में काम करते हैं। एक-दूसरे को सहयोग देता है। आदमी जो भी व्यवहार करे, उसमें ईमानदारी रहे। दो शब्द हैं—वृत्त और वित्त। वृत्त यानी जीवन चरित्र और वित्त यानी पैसा। चारित्र की प्रयत्नपूर्वक सुरक्षा करो। कारण वह धन से ज्यादा कीमती चीज है। पैसा तो आता है, चला जाता है।

झूठा आरोप कभी नहीं लगाना चाहिए। झूठ भी न बोलें। यह अभ्याख्यान पाप है। चोरी से भी बचें। चोरी और झूठ का आपस में संबद्ध है। सच्चाई का रास्ता कुछ कंटकाकीर्ण हो सकता है। पर एक बार तकलीफ आ जाए पर आगे रास्ता बढ़िया है, मंजिल तक पहुँचा सकता है। संयम का रत्न बड़ा है।

गार्हस्थ्य में रहने वाले भी अच्छा जीवन जी सकते हैं। गृहस्थ के वेष में तो केवलज्ञान हो सकता है। भजन भी करें। खान-पान में शुद्धता रहे। जन्म-मरण से छुटकारा पाने का परम लक्ष्य होना चाहिए। परमात्म स्वरूप हमारे भीतर ही है, पर वर्तमान में विकृति में है, हम प्रकृति में आने का प्रयास करें।

आज रणधीसर आना हुआ है। चतुर्मास स्थल छापर पास में ही है। हमारे मुनि छोगजी रणधीसर के आसपास देवलोक कर गए थे। उनका भी स्मरण करता हूँ। पूज्यप्रवर ने सद्‌भावना, नैतिकता और नशामुक्ति—ये तीन सूत्र समझाकर स्वीकार करवाए। रणधीसर के लोगों में धर्म-अध्यात्म के संस्कार रहें।

पूज्यप्रवर के स्वागत में एस०पी० दुर्गपाल सिंह, भवानी सिंह (पूर्व सरपंच) श्रीहरि बोरीकर, (आरएसएस) रवि बैद, प्रदीप सुराणा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने समझाया कि मैं अपने जीवन में सद्‌गुण कैसे भर सकता हूँ।

## हमारा जीवन तप की ज्योति से ज्योतित रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

**चाड़वास, ८ जुलाई, २०२२**

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी अपनी धवल सेना के साथ अपने चातुर्मासिक क्षेत्र छापर से मात्र एक पड़ाव दूर चाड़वास पधारे।

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण जी का आज चाड़वास पदार्पण हुआ। चाड़वास श्रद्धा का अच्छा क्षेत्र है, भले वो संख्या में कम हो। करुणा सिंधु ने पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि चार समाधियों का निर्देशन आगम में प्राप्त होता है—विनय समाधि, श्रुत समाधि, तपः समाधि और आचार समाधि।

आदमी विनय के द्वारा समाधि-शांति को प्राप्त कर सकता है। अनुशासनहीनता, उच्छृंखलता से समाधि दूर हो सकती है। ज्ञान की आराधना, स्वाध्याय करने से समाधान मिल सकता है, शांति मिल सकती है। तपस्या से भी समाधि मिल सकती है। जो जीवन में विविध प्रकार के तप का समाचरण करता है, वह भी समाधि को प्राप्त हो सकता है। आचार, चारित्र निर्मल अच्छा है, आचरण अच्छा है, वह व्यक्ति भी समाधि को प्राप्त हो सकता है।

हमारे जीवन में हम विनयपूर्वक व्यवहार करने का प्रयास करें, श्रुत की आराधना, स्वाध्याय करें, जिज्ञासा होने पर पूछने का प्रयास करें। तप और आचार की आराधना करें। चतुर्मास में तपस्या की विशेष आराधना होती है। सावण-भादवा में तो कितनी लंबी तपस्या कर लेता है। तपस्या के और भी कई प्रकार हैं। मूल चीज है कि आदमी का कषाय कमजोर पड़े। अनाहार की तपस्या कषाय कमजोर करने में सहायक बने।

गुरुदेव तुलसी ने सुदूर यात्राएँ की थीं। यात्रा करना भी एक तपस्या है। इतने बड़े संघ का दायित्व संभालना भी एक तरह की तपस्या है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी भी कितनी श्रुत की आराधना करते थे। आचार्य भिक्षु ने कितनी ज्ञान की आराधना, साहित्य की रचना की थी। कितना उनको सहन करना पड़ा होगा। विरोधों में शांति रखना भी तपस्या है। धैर्य और समाधि रखना भी तपस्या है।

आलोचना का जवाब जबान से न देकर अच्छे कार्यों से दिया जा सकता है। तो आज जो आलोचक-निंदक हैं, कल वो हमारे समर्थक और अच्छे प्रशंसक बन सकते हैं। सहन करना भी एक अच्छी साधना है। अनुकूलता-प्रतिकूलता में भी शांति रखें। सबके प्रति मंगलभावना रखें।

चतुर्मास के प्रारंभ में तेले की तपस्या भी होती है। एक-एक कदम आगे बढ़े। पुरुषार्थ-प्रयत्न करें। सफलता जीवन में न मिले तो निराश न हो, प्रयत्न करते रहो, पुरुषार्थ का दीपक जीवन में जलता रहे। सत्पुरुषार्थ करना भी अपने आपमें एक तपस्या होती है। हमारा जीवन तप की ज्योति से ज्योतित रहना चाहिए।

हमारे जीवन में तप-ज्ञान की ज्योतियाँ जलती रहें। कभी हम परम स्थान मोक्ष को भी प्राप्त कर लें। छोटे-छोटे तप भी कर सकते हैं। ज्ञान-ध्यान की साधना के रूप में तपस्या की जा सकती है। तपस्या के बारह प्रकार बताए हुए हैं। तपस्या, साधना, ज्ञानाराधना का एक परिणाम यह आना चाहिए कि हमारे कषाय पतले पड़ें। राग-द्वेष कमजोर पड़ें। मन में समता का विकास हो।

गृहस्थ जीवन में भी तप की ज्योति, समता की साधना की ज्योति जलती रहनी चाहिए। आत्म कल्याण की दिशा में आगे बढ़ें। धन तो अधिक से अधिक इस जीवन तक है। धर्म है, वो आगे भी काम आ सकता है, धर्म असीम है। धन संचय के साथ धर्म का भी संचय होता रहे। आदमी को धर्म संचय करने का प्रयास करना चाहिए। हमारे धर्म की संपदा बढ़ती रहे। पैसे की कमाई के साथ धर्म की कमाई कितनी की, वह भी ध्यान दें।

व्यापार में भी शुद्धता रहे। तपस्या धर्म के द्वारा हम आध्यात्मिक संपदा बढ़ाने का प्रयास करते रहें, यह काम्य है। आज चाड़वास सन् २०२२ में तीसरी बार आना हुआ है। योग है, छापर निकट है। आगे एक दिन मुझे भी आना है। आचार्य महाप्रज्ञ जी का पहला मर्यादा महोत्सव अलग से यहाँ हुआ था। अनेक चारित्रात्माएँ चाड़वास से हैं, हुए हैं। मुनि सोहनलालजी चाड़वास से मुझे भी तत्त्व ज्ञान सीखने का मौका मिला था। बड़े निर्मल थे। वे उच्च कोटि के कलाकार थे। चाड़वास की जनता में खूब धार्मिकता रहे, मंगलकामना।

(शेष पृष्ठ १० पर)

## आचार्य भिक्षु और भगवान महावीर में अनेक...

(पृष्ठ १२ का शेष)

वो माँ पुण्यशाली की होती है, जो ऐस पुत्र को जन्म देती है। भगवान की माँ ने शेर का स्वप्न देखा था तो माँ दीपां जी ने भी शेर का स्वप्न देखा था। ऐसे पुरुषों को जन्म देने वाली भाग्यशालिनी माताएँ होती हैं, जो दुनिया को ऐसा सपूत प्रदान करती हैं।

भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु दोनों का ही महाप्रयाण चतुर्मास काल में हुआ था। दोनों दो-दो भाई थे। दोनों छोटे भाई थे। दोनों ने ही अपने आप दीक्षा ली थी। इस तरह अनेक समानताएँ भगवान महावीर और आचार्य भिक्षु में थी।

आज चौमासी चतुर्दशी भी है। चतुर्मास स्थापना तो कल होने वाला है। कल लगभग दोपहर ढाई बजे चतुर्मास की स्थापना का अनुष्ठान करने का भाव है। चतुर्मास का समय हमारे सामने है, उसका जितना बढ़िया उपयोग कर सकें, करें। भारत में अनेक जगह हमारे साधु-साध्वियों के चतुर्मास हैं। हमारा चतुर्मास ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप से संयुत हो। छापर का चतुर्मास आसपास के क्षेत्रों को भी लाभ देने वाला हो।

आज शासनमाता साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी की चौथी पुण्यतिथि है। कितनी साध्वियों ने उनकी सेवा का लाभ लिया था। साध्वी कल्पलता जी ने उस समय की घटना को भी समझाया। सेवा का अवसर दिराने पर कृतज्ञता ज्ञापित की। आज से दो माह पहले विश्रुतविभा जी को उनके स्थान पर स्थापित किया था। ये भी खूब अच्छी सेवा देती रहें।

आज चतुर्दशी है, पूज्यप्रवर ने हाजरी का वाचन करते हुए प्रेरणाएँ प्रदान करवाई। लेख पत्र का वाचन मुनि ऋषि जी, मुनि खुश जी, मुनि अर्हम जी एवं मुनि रत्नेश जी ने किया। चारों को चार-चार कल्याणक वख्शीष करवाए। चतुर्मास में अध्ययन करने की प्रेरणा दी। क्रमबद्ध लेख पत्र का वाचन किया था।

शासनश्री साध्वी कैलाशवती जी की स्मृति सभा आयोजित की गई। पूज्यप्रवर ने उनका जीवन परिचय बताया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि के रूप में चार लोगस्स का ध्यान करवाया। पूज्यप्रवर ने उनके भावी जीवन की मंगलकामना की।

मुख्य मुनिप्रवर एवं साध्वी प्रमुखाश्रीजी ने भी उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके जीवन प्रसंगों को समझाया। मुनि दिनेश कुमार जी ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। मुनि राजकुमार जी एवं मुनि हेमराज जी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की।

पूज्यप्रवर के स्वागत में उपासक इंद्रचंद नाहटा, सुमेरमल नाहटा, महामंत्री नरेंद्र नाहटा, महिला मंडल, जतनबाई नाहटा, शशि चोरड़िया, अणुव्रत समिति, नरपत मालू, शिवांगी मेहता, प्रवीण मालू ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

### आचार्यश्री भिक्षु का २६७वाँ जन्म दिवस -बोधि दिवस का आयोजन

# चरम तीर्थंकर प्रभु महावीर और तेरापंथ के आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु में अनेक समानताएँ : आचार्यश्री महाश्रमण

**छापर, १२ जुलाई, २०२२**

आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी-चतुर्दशी आचार्य भिक्षु का २६७वाँ जन्म दिवस एवं चातुर्मासिक चतुर्दशी का दिन। आचार्य भिक्षु के परंपर पट्टधर, वर्तमान के भिक्षु आचार्यश्री महाश्रमण जी ने फरमाया कि आज आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी और चतुर्दशी का योग है, संयुक्त है। आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी ऐसी तिथि है, जिस तिथि को आचार्य भिक्षु का जन्म दिवस होने का मानो अवसर प्राप्त हुआ है। कई बार तिथि भी धन्य हो जाती है, जब वह किसी महापुरुष के साथ जुड़ जाती है।

कार्तिक अमावस्या महापुरुषों के साथ जैसे भगवान महावीर ओर भगवान राम के साथ जुड़ गई है, तो वह तिथि उत्सवमय बन जाती है। दीपावली बन गई है। बड़ों के सान्निध्य में रहने वाला एक सामान्य व्यक्ति भी उस निमित्त से बड़प्पन को प्राप्त हो सकता है।

इन विशेष दिनों को मनाने से कुछ लाभ हो सकते हैं। हमारा महापुरुषों के प्रति अभिवंदन हो जाता है। श्रद्धार्पण हो जाता है। दूसरी बात है कि मानने के माध्यम से कुछ प्रेरणा दी जा सकती है। कुछ सिद्धांत की जानकारी दी जा सकती है। जो बात कई लोग नहीं जानते वो बातें इन तिथियों को मनाने से जानने को मिल सकती है।

वि०सं० १६८३ आषाढ़ शुक्ला त्रयोदशी को बालक भिक्षु प्राकट्य हुआ था। तीन वर्ष बाद तो आचार्य भिक्षु का ३००वाँ जन्म दिवस आने वाला है। कंटालिया ग्राम को आचार्य भिक्षु की जन्म भूमि कहलाने का गौरव प्राप्त है। आचार्य भिक्षु जैन श्वेतांबर तेरापंथ के प्रथम आचार्य थे। हमारे यहाँ आचार्य को तीर्थंकर का प्रतिनिधि कहा गया है। तीर्थंकर जहाँ नहीं है, वहाँ आचार्य की ज्यादा गरिमा होती है। उनको तीर्थंकर के प्रतिनिधित्व करने का एक अपेक्षापूर्ण अवसर उपलब्ध हो सकता है।

आचार्य भिक्षु और भगवान महावीर में अनेक समानताएँ हैं। दोनों का जन्म शुक्ला त्रयोदशी को हुआ था। दोनों ने विवाह किया था। दोनों के एक-एक पुत्री हुई थी। दोनों ही युवा अवस्था में साधु बने। दोनों जीवन के आठवें दशक में महाप्रयाण को प्राप्त हुए थे। भगवान महावीर के देवानंदा और त्रिशला दो माताएँ हो जाती हैं, तो किसी रूप में आचार्य भिक्षु के पिताजी ने भी दो शादियाँ की थीं तो दो माताएँ हो जाती हैं।

भगवान महावीर ने नए तीर्थ का प्रतिष्ठापन किया था वे उस रूप में आदिकर थे तो आचार्य भिक्षु ने भी नए पंथ का प्रारंभ किया था। संथारा भी दोनों ने किया था। यह अनुसंधान का विषय है कि जितनी समानताएँ आचार्य भिक्षु की भगवान महावीर के साथ हैं, उतनी समानता और किसी आचार्य की भगवान महावीर के साथ है क्या?

आचार्य भिक्षु के पास श्रुत-संपदा अच्छी थी। आचार्य के पास कई संपदाएँ होती हैं। आचार्य के पास शरीर संपदा हो। इंद्रियाँ आचार्य की स्वस्थ रहे, पटु रहे। शरीर की सुंदरता का थोड़ा महत्त्व है। पर शरीर की मजबूती अच्छी हो। सुंदरता से ज्यादा महत्त्व गुणवत्ता का होता है।

आचार्य भिक्षु का चेहरा साँवरा था, वे सांवरिया कहलाते थे। ज्ञान कैसा, निपुणता कैसी है, वो खास बात है। हम आचार्य भिक्षु के साहित्य को देखें, कितने-कितने ग्रंथ हैं। उन ग्रंथों को पढ़ने से लगता है कि उनका ज्ञान अच्छा था, समझाने की शैली भी अच्छी थी। अनेक उनके जीवन की विशेषताएँ हैं। मैं आचार्य भिक्षु के जन्म दिवस पर उन्हें अपनी श्रद्धा का अर्पण करता हूँ।

आचार्य भिक्षु में शील संपदा अच्छी थी। आचार अच्छा था। उनका व्यवहार भी निर्मल था। आचार्य भिक्षु को हम स्वामीजी कहते हैं। आचार ही उनकी क्रांति का एक अंग था। उनमें बुद्धि भी निर्मल थी। आदमी के जीवन में बुद्धि का भी महत्त्व होता है। बुद्धि क्षयोपशम भाव है। बुद्धि का विकास होना चाहिए। बुद्धि अच्छी होती है, तो समस्याओं का समाधान जल्दी प्राप्त हो सकता है। उनमें श्रद्धा का भी बल था। भगवान महावीर के वचनों के प्रति उनकी अटल श्रद्धा थी।

आचार्य भिक्षु के जीवन में हम अनेक गुण, अनेक बैशिष्ट्य देखने का अवसर प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने पिछले जन्म में साधना की होगी तभी वे इतने उच्च कोटि के बने थे। आज का दिन बोधि दिवस के रूप में भी स्थापित है। बोधि का दिन राजनगर से जुड़ा है। उस घटना प्रसंग को समझाया। उस घटना से प्रेरणा लेकर उन्होंने सत्य का उद्घाटन किया था।

(शेष पृष्ठ ११ पर)

# आचार्यश्री महाश्रमण : छापर में चातुर्मासिक प्रवेश की झलकियाँ

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै. जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज, औद्योगिक क्षेत्र, दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 110 002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक : **दिनेश मरोठी**